NIOS PYQ's SOLUTIONS

PREVIOUS YEARS' QUESTIONS & ANSWERS

APRIL-2025

Your Path to Success

खंड - अ

प्रश्न 1 - इतिहास स्वयं _____ विश्लेषण पर आधारित है।

(A) अवलोकन के

(B) दस्तावेजों के

(C)सामान्य अध्ययन के

(D) तुलनात्मक डेटा के

उत्तर - (B) दस्तावेजों के

प्रश्न 2 - अर्थशास्त्र _____ पहलुओं का अध्ययन करता है।

(A) उत्पादन

(B) वितरण

(C) विनिमय

(D) उपर्युक्त सभी

उत्तर - (D) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 3 - निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रामीण जीवन से मेल खाता है?

(A) व्यक्तिवाद

(B) शहरोन्मुख

(C) समूह भावना

(D) तकनीकी-केन्द्रित

उत्तर - (C) समूह भावना

प्रश्न 4 - निम्नलिखित में से कौन-सा समाज और समुदाय के बीच अंतर बताने वाला तत्त्व है?

(A) लोगों का समूह

(B) रुचि की समानता

(C) निश्चित इलाका

(D) एकता की भावना

उत्तर - (C) निश्चित इलाका

प्रश्न 5 - निम्नलिखित में से किसका क्षेत्रीय आधार है?

(A) समाज

(B) समुदाय

(C) समूह

(D) क्लब

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

उत्तर - (B) समुदाय

प्रश्न 6 - अन्तःविवाह एक ऐसा रिवाज है, जिसमें विवाह किस जाति/समूह में करना पड़ता है?

(A) उच्च जाति में

(B) अपने ही समूह में

(C) अपने समूह से बाहर

(D) निम्न जाति में

उत्तर - (B) अपने ही समूह में

प्रश्न 7 - मृत्यु दर में कमी के कारण हुई है

(A) जनसंख्या में वृद्धि

(B) जनसंख्या में कमी

(C) स्थिर अर्थव्यवस्था

(D) बेरोजगारी

उत्तर - (A) जनसंख्या में वृद्धि

प्रश्न 8 - मुगल सम्राटों में सबसे शक्तिशाली बादशाह अकबर ने किस राज्य धर्म की अवधारणा का प्रचार किया?

(A) हिन्दू धर्म

(B) इस्लाम धर्म

(C) दीन-ए-इलाही धर्म

(D) बौद्ध धर्म

उत्तर - (C) दीन-ए-इलाही धर्म

प्रश्न 9 - त्रेता युग में, जाटव _____ थे।

(A) ब्राह्मण

(B) क्षत्रिय

(C) वैश्य

(D) शूद्र

उत्तर - (B) क्षत्रिय

प्रश्न 10 - पारसी धर्म सबसे प्राचीन जीवित धर्मों में से एक है, जिसका इतिहास _____ पुराना है।

(A) दो हजार साल

(B) एक हजार साल

(C) चार हजार साल

(D) तीन हजार साल

उत्तर - (D) तीन हजार साल

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 11 - बौद्ध धर्म ने भारत में किसके शासन में प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया था?

(A) सम्राट अशोक **(B) अकबर**

(C) हर्षवर्धन **(D) पाल**

उत्तर – (A) सम्राट अशोक

प्रश्न 12 - किस सन् में कोचीन के राजा ने यहूदियों को रहने और विशेषाधिकारों का आनंद लेने का अधिकार दिया?

(A) 1029 **(B) 1030**

(C) 1020 **(D) 1025**

उत्तर - (C) 1020

प्रश्न 13 - सिख शिष्य हैं

(A) पाँच गुरुओं के **(B) दस गुरुओं के**

(C) चार गुरुओं के **(D) दो गुरुओं के**

उत्तर - (B) दस गुरुओं के

प्रश्न 14 - हमारे देश में 6–14 वर्ष के आयु वर्ग के अशिक्षित बच्चों की संख्या कितनी है ?

(A) 3 करोड़ **(B) 4 करोड़**

(C) 6 करोड़ **(D) 5 करोड़**

उत्तर - (B) 4 crores

प्रश्न 15 - जूडेइज़्म के अनुयायियों को कहा जाता है

(A) मज़दावाद (ज़रतश्ती धर्म) **(B) जैन**

(C) बौद्ध **(D) यहूदी**

उत्तर - (D) यहूदी

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 16 - अस्पृश्यता अपराध अधिनियम किस वर्ष में घोषित किया गया ?

(A) 1955 **(B) 1976**

(C) 1958 **(D) 1956**

उत्तर - (A) 1955

प्रश्न 17 - बिहार के छोटानागपुर में संथाल विद्रोह किस वर्ष में हुआ था?

(A) 1831 **(B) 1857**

(C) 1855 **(D) 1821**

उत्तर - (C) 1855

प्रश्न 18 - रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(a) _____ काम करने या व्यवहार करने का एक स्थापित तरीका है ।

उत्तर - संस्था

(b) पति, पत्नी और अविवाहित बच्चों वाले परिवार को _____ परिवार कहते हैं।

उत्तर - एकाकी

प्रश्न 19 - रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(a) पारंपरिक समाज की विशेषता _____ श्रम था।

उत्तर - मानव द्वारा किया गया

(b) चुनाव नागरिकों में _____ की भावना पैदा करते हैं।

उत्तर - उत्तरदायित्व

प्रश्न 20 - एक शब्द में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

(a) एक महिला उन पुरुषों से विवाह करती है, जो भाई होते हैं। इस प्रथा को कहा जाता है _____।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

उत्तर - बहुपति प्रथा

(b) पिता और पुत्री, माता और पुत्र, भाई और बहन के बीच निषिद्ध वैवाहिक संबंध को कहा जाता है _____।

उत्तर - अनाचार

(c) वह विवाह, जिसमें निम्न जाति का लड़का उच्च जाति की लड़की से विवाह करता है, उसे कहा जाता है _____।

उत्तर - प्रतिलोम विवाह

(d) एक व्यक्ति के रिश्तेदारों के द्विपक्षीय समूह का वर्णन करता है, उसे कहा जाता है _____।

उत्तर - द्विपार्श्विक नातेदारी

(e) वह नातेदारी व्यवहार, जिसमें दो नातेदार एक-दूसरे का संबोधन सीधे नहीं करते, उन्हें कहते हैं _____।

उत्तर – अप्रत्यक्ष संबोधन

प्रश्न 21 – सही या गलत लिखिए

(a) महिलाओं पर घरेलू हिंसा जाति से ऊपर है।

उत्तर - सही ✅

(b) पितृवंशीय परिवार में बेटियों को विरासत और उत्तराधिकार का अधिकार मिलता है।

उत्तर - गलत ❌ (पितृसत्तात्मक परिवार में पुत्रियां उत्तराधिकार और संपत्ति में अधिकार नहीं रखती)

प्रश्न 22 – सही या गलत लिखिए

(a) समाजशास्त्री अपने आंकड़े अभिलेखागार से प्राप्त करते हैं।

उत्तर - सही ✅

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(b) समाजशास्त्र एक अवलोकनात्मक विज्ञान है।

उत्तर - सही ✅

(c) राजनीति विज्ञान मानव समाज की सभी संस्थाओं का अध्ययन करता है।

उत्तर - गलत ❌ (राजनीति विज्ञान केवल राजनीति, शासन और सत्ता की संस्थाओं का अध्ययन करता है, समाज की सभी संस्थाओं का नहीं।)

प्रश्न 23- कॉलम—A का कॉलम—B से मिलान कीजिए :

कॉलम—A	**कॉलम—B**
(a) डिन्क	**(i) वर्गहीनता की स्थिति**
(b) अधिकार	**(ii) वह व्यक्ति जिसके आधार पर नातेदारी निश्चित की जाती है**
(c) साम्यवादी समाज	**(iii) नौकरी पेशा दम्पति, जिनके कोई बच्चे नहीं हैं**
(d) ईगो	**(iv) जब सत्ता वैध हो**

उत्तर -

कॉलम—A	**कॉलम—B**
(a) डिन्क	(iii) नौकरी पेशा दम्पति, जिनके कोई बच्चे नहीं हैं
(b) अधिकार	(iv) जब सत्ता वैध हो
(c) साम्यवादी समाज	(i) वर्गहीनता की स्थिति
(d) ईगो	(ii) वह व्यक्ति जिसके आधार पर नातेदारी निश्चित की जाती है

प्रश्न 24 - निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

विकास की अवधारणा हाल ही के वर्षों में विकसित हुई है। इसका लक्ष्य वांछित दिशा में परिवर्तन होता है। यह समाज के सदस्यों द्वारा वांछनीय समझी जाने वाली एक दिशा में सुनियोजित सामाजिक परिवर्तन की रणनीति होती है। यह संदर्भपरक और प्रकृति सापेक्ष होती है। अतः विकास का विचार एक समाज से दूसरे समाज में अलग-अलग हो सकता है। यह समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक और राजनैतिक स्थितियों पर आधारित होता है। यह एक मिला-जुला विचार है। इसमें अन्य विभिन्न क्षेत्रों जैसे-व्यापार, कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा इत्यादि की प्रगति सम्मिलित होती है। इसी के साथ, कमज़ोर वर्गों, महिलाओं, बीमार, बुजुर्गों, बेरोज़गारों के कल्याण-कार्यक्रम भी विचारणीय बिंदुओं में से कुछ हैं। अतः विकास एक मूल्य-परिपूरित विचार है, जिसमें सामाजिक-सांस्कृतिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है।

(a) विकास की रणनीति योजना की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - विकास की रणनीति समाज के सदस्यों द्वारा वांछित दिशा में किया जाने वाला एक सुनियोजित सामाजिक परिवर्तन है।

(b) यह किस पर आधारित है?

उत्तर - यह समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक और राजनैतिक स्थितियों पर आधारित है।

(c) इसमें प्रगति कैसे शामिल हुई?

उत्तर - विकास में व्यापार, कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसे विविध क्षेत्रों के समन्वित उत्थान और सर्वांगीण सुधार को सम्मिलित किया गया जिससे इसमें प्रगति शामिल हुई।

(d) यह मूल्य-परिपूरित विचार कैसे है?

उत्तर - यह मूल्य-परिपूरित विचार इसलिए है क्योंकि इसमें सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक आवश्यकताओं के साथ कमजोर वर्गों के कल्याण को भी शामिल किया गया है।

प्रश्न 25 –निम्नलिखित दावा-कारण प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(a) निम्नलिखित के आधार पर सही विकल्प की पहचान कीजिए :

दावा (A) : ग्रामीण और शहरी समाजों के बीच निरंतर अंत:क्रिया होती रहती है।

कारण (R) : दोनों समुदायों द्वारा निरंतर आमने-सामने बातचीत।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(A) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है

(B) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है

(C) दोनों (A) और (R) सही हैं

(D) दोनों (A) और (R) गलत हैं

उत्तर - (C) दोनों (A) और (R) सही हैं

(b) निम्नलिखित के आधार पर सही विकल्प की पहचान कीजिए :

दावा (A) : जाति व्यवस्था कर्मकाण्ड पर आधारित है।

कारण (R) : वर्ग धर्मनिरपेक्ष मानदंडों पर आधारित नहीं है।

(A) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है

(B) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है

(C) दोनों (A) और (R) सही हैं

(D) दोनों (A) और (R) गलत हैं

उत्तर - (A) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है

(वर्ग धर्मनिरपेक्ष मानदंडों जैसे आय, शिक्षा पर आधारित होता है)

(c) निम्नलिखित के आधार पर सही विकल्प की पहचान कीजिए :

दावा (A) : सामाजिक परिवर्तनों की पद्धति प्रकृति की लय की तरह है जैसे दिन और रात, जिनका एक पूर्व निर्धारित जीवन-चक्र होता है।

कारण (R) : तीव्र परिवर्तन, नजदीक से देखने पर, गतिविधियों के दोहराव वाले समूह प्रतीत होते हैं और ये गतिविधियाँ चक्रीय पद्धति नहीं बनातीं हैं।

(A) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है

(B) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है

(C) दोनों (A) और (R) सही हैं

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(D) दोनों (A) और (R) गलत हैं

उत्तर - (B) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है

(ये गतिविधियाँ चक्रीय पद्धति बनातीं हैं।)

(d) निम्नलिखित के आधार पर सही विकल्प की पहचान कीजिए :

दावा (A) : हमारे समाज में लड़कियों को भेदभावपूर्ण व्यवहार सहना पड़ता है।

कारण (R) : लड़कियाँ अपनी शिक्षा के अवसरों से वंचित हैं।

(A) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है

(B) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है

(C) दोनों (A) और (R) सही हैं

(D) दोनों (A) और (R) गलत हैं

उत्तर – (C) दोनों (A) और (R) सही हैं

"खण्ड-ख"

(SECTION—B)

निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 80 से 120 शब्दों में लिखिए:

प्रश्न 26: आनुभविक विधि किससे संबंधित है?

उत्तर: अनुभवात्मक विधि समाजशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों में प्रयोग की जाने वाली एक शोध पद्धति है। यह सीधे अनुभव और अवलोकन से संबंधित होती है। इसमें तथ्यों, आंकड़ों और प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं, न कि केवल विचार या सिद्धांतों से। अनुभवात्मक विधि में सर्वेक्षण, साक्षात्कार, प्रेक्षण और प्रयोग जैसे तरीके शामिल हैं। इसका उद्देश्य समाज में घटित होने वाली वास्तविक घटनाओं, व्यवहार और प्रक्रियाओं को समझना और उनका विश्लेषण करना है। यह पद्धति वास्तविक डेटा पर आधारित निष्पक्ष ज्ञान प्रदान करती है।

प्रश्न 27: 'किब्बूट्ज़' की व्याख्या कीजिए।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

उत्तर: किब्बूट्ज़ एक इस्राइली सामूहिक बस्ती है जिसमें लोग जमीन, पूँजी और संसाधनों को साझा करते हैं। इसमें उत्पादन, वितरण और उपभोग सामूहिक रूप से होता है। सामाजिक समानता और सहयोग किब्बूट्ज़ की मुख्य विशेषता है। हर सदस्य अपने योग्यता और क्षमता के अनुसार कार्य करता है और आवश्यकताओं के अनुसार संसाधन प्राप्त करता है। यह प्रणाली पारिवारिक इकाई से अधिक सामूहिक जीवन पर आधारित होती है। इसमें निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते हैं और व्यक्तिगत संपत्ति न्यूनतम होती है। किब्बूट्ज़ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक आदर्श सहयोगात्मक समुदाय के रूप में माना जाता है।

अथवा

आप नवस्थानिक परिवार से क्या समझते हैं?

उत्तर: नवस्थानिक परिवार वह परिवार है जिसमें विवाह के बाद दंपति अपने अलग निवास स्थान पर रहते हैं। इसमें दंपति माता-पिता या बड़े परिवार के साथ नहीं रहते। नवस्थानिक परिवार व्यक्तिगत स्वतंत्रता, गोपनीयता और आर्थिक स्वायत्तता पर आधारित होता है। यह परिवार आधुनिक समाजों में अधिक सामान्य है, जहाँ दंपति अपने करियर, सुविधा और व्यक्तिगत निर्णयों के अनुसार अपने घर की स्थापना करते हैं। इस प्रकार, नवस्थानिक परिवार परंपरागत संयुक्त परिवार से भिन्न होता है।

प्रश्न 28: सामाजिक स्तरीकरण को परिभाषित कीजिए।

उत्तर: सामाजिक स्तरीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें समाज को विभिन्न सामाजिक स्तरों या वर्गों में विभाजित किया जाता है। यह विभाजन आर्थिक स्थिति, जाति, पेशा, शिक्षा और शक्ति के आधार पर होता है। प्रत्येक स्तर के लोगों के अधिकार, कर्तव्य और सामाजिक स्थिति अलग होती है। सामाजिक स्तरीकरण समाज में पदानुक्रम, असमान अवसर और सामाजिक भेदभाव को जन्म देता है। यह प्रणाली स्थायी या अस्थायी हो सकती है, और इसके कारण सामाजिक गतिशीलता और असमानता पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न 29: आप नियम अनुकूलन आदत से क्या समझते हैं?

उत्तर: नियम अनुकूलन आदत वह आदत है जिसमें व्यक्ति समाज के कायदे-कानून और सामाजिक नियमों का पालन करता है। यह आदत व्यक्ति के व्यवहार में अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी का निर्माण करती है। नियमों का पालन न केवल समाज में व्यवस्था बनाए रखता है, बल्कि व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को सहज और सुरक्षित बनाता है। नियम अनुकूलन आदत व्यक्तियों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती है और समाज में सुसंगठित व्यवहार को प्रोत्साहित करती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 30: सामाजिक परिवर्तन के क्रमिक विकास के सिद्धांत को संक्षेप में समझाइए।

उत्तर: सामाजिक परिवर्तन के क्रमिक विकास का सिद्धांत बताता है कि समाज धीरे-धीरे **साधारण से जटिल** और **पारंपरिक से आधुनिक** संरचनाओं की ओर विकसित होता है। इस सिद्धांत के अनुसार परिवर्तन एक क्रमिक और प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसमें तकनीकी, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारक समाज को विकसित और बदलते रहते हैं। सामाजिक संस्थाएँ, प्रथाएँ और मूल्य समय के साथ बदलते हैं और समाज के विकास में योगदान करते हैं। यह सिद्धांत सामाजिक विकास की क्रमिकता और दिशा पर बल देता है।

प्रश्न 31. अनुसूचित जातियाँ किन समस्याओं का सामना करती हैं?

उत्तर: अनुसूचित जातियों कि समस्याएँ:-

1. **जातिगत भेदभाव और सामाजिक अपमान –** समाज में उन्हें नीचा दिखाया जाता है और भेदभाव झेलना पड़ता है।
2. **शिक्षा में असमानता –** स्कूलों और उच्च शिक्षा में सीमित अवसर और अभाव।
3. **रोजगार और आर्थिक पिछड़ापन –** अच्छी नौकरी और आय के स्रोतों की कमी।
4. **भूमि और संसाधनों की कमी –** कृषि योग्य भूमि या अन्य प्राकृतिक संसाधनों का अभाव।
5. **राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक सुरक्षा में कमी –** समाज और प्रशासन में प्रभाव और सुरक्षा सीमित।

अथवा

अनुसूचित जनजातियाँ किन विभिन्न समस्याओं का सामना करती हैं?

उत्तर: अनुसूचित जनजातियों कि समस्याएँ:-

1. **आर्थिक पिछड़ापन –** रोजगार के अवसर सीमित, आय के साधन कम और गरीबी अधिक।
2. **शिक्षा और स्वास्थ्य में कमी –** स्कूल, कॉलेज और स्वास्थ्य सेवाएँ दूर-दराज क्षेत्रों में अपर्याप्त।
3. **भौगोलिक और सामाजिक अलगाव –** कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में रहने के कारण विकास योजनाओं का लाभ नहीं मिलता।
4. **सांस्कृतिक एवं पारंपरिक अधिकारों की हानि –** भूमि, जंगल और संसाधनों पर उनके पारंपरिक अधिकारों का उल्लंघन।
5. **राजनीतिक और सामाजिक प्रतिनिधित्व की कमी –** निर्णय लेने वाली संस्थाओं में उनका प्रभाव और भागीदारी सीमित।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150 से 200 शब्दों में दीजिए :

प्रश्न 32: समूह और समाज के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

आधार	समूह	समाज
परिभाषा	दो या दो से अधिक लोग जो किसी सामान्य लक्ष्य, हित या गतिविधि के लिए जुड़े हों	व्यक्तियों और समूहों का व्यापक संगठन जो साझा संस्कार, नियम और संस्कृति पर आधारित हो
आकार और सीमा	आकार में छोटा और सीमित, जैसे परिवार या मित्र समूह	आकार में बड़ा और व्यापक, जैसे शहर या राष्ट्र
संबंध का प्रकार	संबंध व्यक्तिगत, घनिष्ठ और प्रत्यक्ष होते हैं	संबंध औपचारिक, अप्रत्यक्ष और जटिल होते हैं
नियम और नियंत्रण	नियम अनौपचारिक और आपसी सहमति पर आधारित	नियम औपचारिक होते हैं और कानून द्वारा नियंत्रित
उद्देश्य	सामान्य हित या किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति	सामाजिक व्यवस्था, स्थिरता और निरंतरता बनाए रखना
निष्कर्षात्मक स्वरूप	व्यक्ति-केंद्रित और सीमित संरचना	व्यापक, संगठित और संरचित सामाजिक व्यवस्था

प्रश्न 33: प्राथमिक समूह की क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर: प्राथमिक समूह समाज का आधार हैं और इसमें गहरे और व्यक्तिगत संबंध होते हैं। इसकी विशेषताएँ:

1. **सघन और व्यक्तिगत संपर्क:** सदस्य एक-दूसरे से प्रत्यक्ष और लगातार संपर्क में रहते हैं।
2. **भावनात्मक निकटता:** प्यार, स्नेह और सहयोग पर आधारित गहरा संबंध होता है।
3. **छोटा आकार:** समूह सामान्यतः छोटा होता है, ताकि सदस्य आपस में जुड़ सकें।
4. **दीर्घकालिक संबंध:** इसमें संबंध स्थायी और लंबे समय तक टिकते हैं।
5. **सामाजिक नियंत्रण:** समूह के सदस्य परस्पर आपसी समझ और आदर्शों से नियंत्रित होते हैं।
6. **साझा उद्देश्य:** समूह के सदस्यों का उद्देश्य व्यक्तिगत और सामाजिक विकास पर केंद्रित होता है।

उदाहरण: परिवार और मित्र समूह प्राथमिक समूह के आदर्श उदाहरण हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 34. परम्परागत हिन्दू विवाह के चार उचित और वांछित स्वरूप क्या थे?

उत्तर: परंपरागत हिन्दू विवाह में आठ प्रकार माने गए हैं, जिनमें से चार को **उचित और वांछित** माना गया है। ये विवाह धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से आदर्श माने जाते हैं।

1. **ब्राह्म विवाह** – इसमें कन्या का विवाह योग्य, विद्वान और सुशील वर से बिना किसी लेन-देन के किया जाता है। इसे सबसे श्रेष्ठ और आदर्श विवाह माना जाता है।
2. **दैव विवाह** – इस विवाह में कन्या का विवाह यज्ञ करने वाले पुरोहित से धार्मिक कर्तव्य के रूप में संपन्न होता है।
3. **आर्ष विवाह** – इसमें वर कन्या के पिता को प्रतीकात्मक रूप से एक या दो गायें देकर विवाह करता है।
4. **प्राजापत्य विवाह** – कन्या को गृहस्थ धर्म पालन के उद्देश्य से वर को सौंपा जाता है और दोनों को धर्मपालन का उपदेश दिया जाता है।

ये चारों स्वरूप धार्मिक, नैतिक और सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य हैं और हिन्दू समाज में आदर्श माने जाते हैं।

प्रश्न 35. कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर द्वारा दिये गये सामाजिक स्तरीकरण की अवधारणा पर चर्चा कीजिए।

उत्तर: कार्ल मार्क्स के अनुसार सामाजिक स्तरीकरण का आधार आर्थिक संरचना है। उन्होंने समाज को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया - बुर्जुआ वर्ग, जो उत्पादन के साधनों का मालिक होता है, और प्रोलितारियात वर्ग, जो अपनी श्रम शक्ति बेचता है। मार्क्स का मानना था कि इन दोनों वर्गों के बीच वर्ग संघर्ष अनिवार्य है और यही संघर्ष सामाजिक परिवर्तन का मुख्य कारण बनता है।

इसके विपरीत, मैक्स वेबर ने सामाजिक स्तरीकरण को बहुआयामी माना। वेबर के अनुसार समाज में केवल आर्थिक वर्ग ही नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनीतिक शक्ति भी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को निर्धारित करती है। उन्होंने समाज को वर्ग, स्थिति और सत्ता के आधार पर समझने का प्रयास किया।

इस प्रकार, जहाँ मार्क्स का दृष्टिकोण एकांगी और आर्थिक है, वहीं वेबर का दृष्टिकोण व्यापक और बहुआयामी है।

प्रश्न 36. व्यक्तित्व विकास में समाजीकरण की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

उत्तर: व्यक्तित्व विकास वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति के विचार, भावनाएँ, व्यवहार, मूल्य और सामाजिक क्षमता विकसित होती है। समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति समाज के नियम, आदर्श, मूल्य और सामाजिक व्यवहार सीखता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक यह प्रक्रिया चलती रहती है।

मुख्य बिंदु:

1. **सामाजिक मूल्य और आदर्श सीखना:** समाजीकरण व्यक्ति को ईमानदारी, सहिष्णुता, सहयोग और अनुशासन जैसे सामाजिक मूल्यों से परिचित कराता है।
2. **व्यवहार और अनुशासन:** व्यक्ति सामाजिक नियमों और नैतिक मानदंडों का पालन करना सीखता है। जैसे, स्कूल में छात्रों को समय पर आना, शिक्षक का सम्मान करना।
3. **सामाजिक पहचान और भूमिका:** समाजीकरण से व्यक्ति अपनी सामाजिक भूमिका, जिम्मेदारियाँ और अधिकार समझता है। उदाहरण के लिए, परिवार में बच्चे को बड़ा भाई या बहन बनने की जिम्मेदारी सिखाई जाती है।
4. **भावनात्मक विकास:** परिवार और मित्र समूह से प्रेम, सहानुभूति, सहयोग और सहनशीलता का विकास होता है।
5. **सांस्कृतिक चेतना:** व्यक्ति अपनी संस्कृति, परंपराएँ और रीति-रिवाज सीखता है। उदाहरण: त्यौहारों में भाग लेना और सामाजिक रस्मों का पालन।

इस प्रकार, समाजीकरण व्यक्तित्व विकास का आधार है। इसके माध्यम से व्यक्ति सामाजिक रूप से सक्षम, नैतिक और संतुलित बनता है।

अथवा

सामाजिक परिवर्तन के सांस्कृतिक कारक क्या हैं?

उत्तर: सामाजिक परिवर्तन वह प्रक्रिया है जिसमें समाज की संरचना, व्यवहार और मूल्यों में बदलाव आता है। सांस्कृतिक कारक इन परिवर्तनों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुख्य बिंदु:

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

1. **धार्मिक विश्वास और सुधार आंदोलन:** धार्मिक विचारों और सुधार आंदोलनों से समाज की पुरानी प्रथाएँ बदलती हैं। उदाहरण: बाल विवाह का अंत।
2. **शिक्षा और ज्ञान का प्रसार:** शिक्षा और विज्ञान समाज में नई सोच, दृष्टिकोण और सामाजिक जागरूकता लाते हैं।
3. **भाषा और संचार माध्यम:** मीडिया, इंटरनेट और सोशल मीडिया से नए विचार और परिवर्तन तेजी से समाज तक पहुँचते हैं।
4. **कला और साहित्य:** कला, साहित्य और फिल्में समाज में नई चेतना और मूल्य विकसित करती हैं।
5. **परंपरा और रीति-रिवाजों में बदलाव:** सांस्कृतिक आदतें जैसे पोशाक, खानपान और व्यवहार धीरे-धीरे बदलती हैं।

उदाहरण: महिला सशक्तिकरण और शिक्षा ने भारत में सामाजिक परिवर्तन को गति दी है।

इस प्रकार, सांस्कृतिक कारक समाज की सोच, मूल्य और व्यवहार बदलकर सामाजिक परिवर्तन को संभव बनाते हैं।

प्रश्न 37. जाति व्यवस्था की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: जाति व्यवस्था भारतीय समाज की प्राचीन सामाजिक संरचना है। यह जन्म आधारित और धार्मिक नियमों पर आधारित व्यवस्था है, जो व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक भूमिकाओं को निर्धारित करती है। यह केवल व्यक्तिगत पहचान नहीं, बल्कि पूरे समाज की संरचना को नियंत्रित करती है।

मुख्य विशेषताएँ:

1. **जन्म आधारित विभाजन:** व्यक्ति की जाति जन्म से तय होती है और जीवनभर अपरिवर्तनीय रहती है। उदाहरण: ब्राह्मण शिक्षा और धर्म में, शूद्र सेवा या श्रम कार्य में।
2. **धार्मिक आधार:** जाति धर्म और कर्मकांड नियमों पर आधारित है। प्रत्येक जाति को धर्म और सामाजिक कर्तव्य निभाने का उत्तरदायित्व दिया जाता है।
3. **पारंपरिक पेशा और व्यवसाय:** ब्राह्मण शिक्षा और धर्म, क्षत्रिय शासन और युद्ध, वैश्य व्यापार और वाणिज्य, शूद्र सेवा कार्य में लगे रहते थे।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. **सामाजिक प्रतिबंध:** विवाह और भोजन संबंधी नियम कठोर थे। लोग केवल अपनी जाति के भीतर विवाह और सामाजिक संबंध बनाए।

5. **सामाजिक असमानता:** उच्च जातियों को अधिक सम्मान और अधिकार, निम्न जातियों को कम अवसर प्राप्त होते थे।

6. **स्थायित्व:** जाति संरचना समय के साथ स्थायी रहती है। आधुनिक सुधारों के बावजूद इसका प्रभाव समाज में अभी भी दिखता है।

प्रश्न 38. शहरी समाजों की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: शहरी समाज बड़े औद्योगिक और नगरीकृत क्षेत्रों में पाया जाता है। यह समाज **गतिशील, विविध और आधुनिक** होता है। शहरी समाज आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से ग्रामीण समाज से भिन्न होता है और इसमें व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

मुख्य विशेषताएँ:

1. **उच्च जनसंख्या घनत्व:** शहरों में अधिक लोग रहते हैं, जिससे जनसंख्या दबाव बढ़ता है। यह आवास, परिवहन और सार्वजनिक सेवाओं पर प्रभाव डालता है।

2. **औपचारिक और द्वितीयक संबंध:** शहरी समाज में संबंध व्यक्तिगत नहीं, बल्कि औपचारिक और अनुबंध आधारित होते हैं। लोग काम और पेशे के आधार पर जुड़ते हैं।

3. **व्यावसायिक और पेशागत विविधता:** उद्योग, व्यापार, सेवा, शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हैं।

4. **सामाजिक गतिशीलता:** व्यक्ति अपनी सामाजिक स्थिति बदल सकता है। शिक्षा और पेशा के माध्यम से सामाजिक उन्नति संभव है।

5. **विविध संस्कृति और बहुसांस्कृतिक समाज:** शहरों में विभिन्न जातियों, धर्मों और भाषाओं के लोग रहते हैं, जिससे सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता बढ़ती है।

6. **व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता:** शहरी समाज में व्यक्ति की निजी स्वतंत्रता अधिक होती है और निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

7. **आधुनिक सुविधाएँ:** शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, मनोरंजन और सूचना प्रौद्योगिकी की सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं।

अथवा

वर्ण और जाति के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

आधार	वर्ण	जाति
परिभाषा	हिन्दू धर्मशास्त्रों के चार मुख्य वर्ग: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र	जन्म, व्यवसाय और क्षेत्र आधारित सामाजिक उपवर्ग
आधार	धार्मिक नियम और कर्मकांड	सामाजिक परंपरा, स्थानीय रीति-रिवाज और व्यावहारिक आवश्यकताएँ
संख्या	केवल 4	हजारों उपजातियाँ
गतिशीलता	स्थायी और सैद्धांतिक, जन्म से निर्धारित	समय, क्षेत्र और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तनशील
उदाहरण	ब्राह्मण शिक्षा और धर्म में, क्षत्रिय प्रशासन और युद्ध में	एक ही जाति में विभिन्न उपजातियाँ और पेशे, जैसे राजस्थानी या महाराष्ट्र की जातियाँ
निष्कर्ष	धार्मिक और सैद्धांतिक; समाज की व्यापक संरचना दर्शाता है	व्यावहारिक और क्षेत्रीय आधार पर विस्तृत; समाज में प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 39. परिवार की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: परिवार समाज की सबसे छोटी और मौलिक सामाजिक इकाई है। यह व्यक्ति की सामाजिक, भावनात्मक और आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। परिवार न केवल बच्चों की देखभाल और पालन-पोषण करता है, बल्कि समाज में संस्कार, भाषा और मूल्य भी सिखाता है। यह समाज की स्थिरता और विकास में आधारभूत भूमिका निभाता है।

मुख्य विशेषताएँ:

1. **सामाजिक एकाई:** परिवार व्यक्ति और समाज के बीच का पहला संपर्क होता है। यह सामाजिक पहचान और सुरक्षा प्रदान करता है। परिवार के माध्यम से व्यक्ति सामाजिक नियम और व्यवहार सीखता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. **रक्त या विवाह संबंध:** परिवार के सदस्य जन्म या विवाह के माध्यम से जुड़े होते हैं। यह संबंध परिवार को स्थायित्व प्रदान करता है और पीढ़ियों के बीच सामाजिक मूल्यों का आदान-प्रदान सुनिश्चित करता है।
3. **साझा जीवन और संसाधन:** परिवार के सदस्य एक साथ रहते हैं और आवास, भोजन, वस्त्र और अन्य संसाधनों को साझा करते हैं। संयुक्त परिवार में तीन या चार पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं।
4. **आर्थिक सहयोग:** परिवार आर्थिक सहयोग का केंद्र होता है। इसमें आय और व्यय साझा होते हैं और प्रत्येक सदस्य अपने योगदान के अनुसार जिम्मेदारी निभाता है।
5. **सामाजिक और भावनात्मक समर्थन:** परिवार बच्चों, बुजुर्गों और बीमारों को भावनात्मक सुरक्षा और देखभाल प्रदान करता है। यह सदस्य की मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक विकास में सहायक होता है।
6. **सामाजिकरण का माध्यम:** परिवार बच्चों को सामाजिक मूल्यों, संस्कारों, भाषा, रीति-रिवाज और धर्म की जानकारी देता है। यह व्यक्ति को समाज में स्थापित होने के लिए तैयार करता है।
7. **सदस्यों के अधिकार और कर्तव्य:** परिवार में प्रत्येक सदस्य की भूमिका, अधिकार और जिम्मेदारी तय होती है। माता-पिता, बच्चे और बुजुर्ग सभी मिलकर परिवार की व्यवस्था बनाए रखते हैं।

उदाहरण: भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का उदाहरण मिलता है, जहाँ तीन या चार पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं और संसाधनों को साझा करती हैं।

निष्कर्ष: परिवार केवल व्यक्ति का आधार नहीं, बल्कि समाज की स्थिरता और विकास का केंद्र है। यह बच्चों के व्यक्तित्व, नैतिक मूल्यों और सामाजिक समझ के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रश्न 40. जनजातीय समाज की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: जनजातियाँ ऐसे सामाजिक समूह हैं जो विशिष्ट सांस्कृतिक, भाषाई और ऐतिहासिक पहचान रखते हैं। भारत में जनजातीय समाज अक्सर पहाड़, जंगल और ग्रामीण क्षेत्रों में बसते हैं। ये समाज अपने पारंपरिक रीति-रिवाजों, भाषा और जीवन शैली के लिए प्रसिद्ध हैं।

मुख्य विशेषताएँ:

1. **सीमित और स्वतंत्र क्षेत्र:** जनजातियाँ अक्सर जंगल, पहाड़ या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं। उनका निवास क्षेत्र विशेष पहचान और संरक्षण प्रदान करता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. **समानता आधारित समाज:** अधिकांश जनजातीय समाज में संपत्ति और अधिकार समान रूप से वितरित होते हैं। सामाजिक पद और संपत्ति पर अत्यधिक असमानता नहीं होती।

3. **सांस्कृतिक विशिष्टता:** प्रत्येक जनजाति की अपनी भाषा, परंपरा, उत्सव और धार्मिक मान्यताएँ होती हैं। ये उनकी पहचान का प्रमुख हिस्सा हैं।

4. **आर्थिक साधन:** जनजातियाँ कृषि, शिकार, मछली पकड़ना और हस्तकला जैसे कामों पर निर्भर रहती हैं। ये आर्थिक गतिविधियाँ पारंपरिक ज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होती हैं।

5. **सामूहिक निर्णय और नेतृत्व:** जनजातीय समाज में निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते हैं। नेता या मुखिया समूह द्वारा चुना जाता है और सभी सदस्यों की राय को महत्व दिया जाता है।

6. **पर्यावरण पर निर्भरता:** जीवन का तरीका प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होता है। जंगल, नदी और खेत इनके जीवन का आधार हैं।

7. **सामाजिक नियंत्रण और नियम:** परंपरा और रीति-रिवाज जनजातियों में सामाजिक नियंत्रण बनाए रखते हैं। उदाहरण के लिए विवाह, भोजन और त्यौहार के नियम कठोर होते हैं।

उदाहरण: गोंड, संथाल और भिल जैसी आदिवासी जनजातियाँ अपनी परंपराओं, त्योहारों और भाषा के लिए जानी जाती हैं।

निष्कर्ष: जनजातीय समाज प्राकृतिक जीवन, सांस्कृतिक विविधता और सामूहिक सहयोग का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह समाज आधुनिक बदलाव के बावजूद अपनी सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक जीवनशैली बनाए रखता है।

अथवा

भारतीय समाज में गली में रहने वाले बच्चों के सामने आने वाली प्रमुख समस्याएँ क्या हैं?

उत्तर: वह गली के बच्चे या सड़क पर रहने वाले बच्चे समाज के **आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग** से आते हैं। ये बच्चे आमतौर पर परिवार की देखभाल से वंचित रहते हैं या परिवार नहीं होने के कारण सड़क पर जीवन यापन करते हैं। उनकी जिंदगी असुरक्षा और कठिनाइयों से भरी होती है, जिससे उनका मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास प्रभावित होता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

मुख्य समस्याएँ:

1. **आवास और सुरक्षा की कमी:** गली के बच्चे खुले में या असुरक्षित स्थानों पर रहते हैं। बारिश, धूप, ठंड और अन्य प्राकृतिक कठिनाइयों का सामना उन्हें अकेले करना पड़ता है। इसके साथ ही सड़क पर रहना उन्हें **चोरी, हिंसा और अपराध** के शिकार भी बना देता है।

2. **शिक्षा का अभाव:** ये बच्चे नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पाते। पढ़ाई और सीखने के अवसरों की कमी के कारण वे शैक्षणिक रूप से पिछड़ जाते हैं और जीवन में आगे बढ़ने के अवसरों से वंचित रह जाते हैं।

3. **स्वास्थ्य और पोषण की कमी:** गली के बच्चों का भोजन अस्वच्छ और अपर्याप्त होता है। पीने का पानी साफ नहीं होता और स्वच्छता की कमी के कारण वे कई बीमारियों, संक्रमण और पोषण की कमी से ग्रस्त रहते हैं।

4. **शोषण और अपराध:** सड़क पर रहने वाले बच्चों को बाल श्रम, चोरी, तस्करी और यौन शोषण जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। कई बच्चे झुग्गी-झोपड़ियों या भीड़ वाले इलाकों में काम करने के लिए मजबूर होते हैं, जिससे उनकी शारीरिक और मानसिक सुरक्षा खतरे में रहती है।

5. **सामाजिक भेदभाव:** समाज में इन्हें नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है। गली के बच्चों को अवसरों और सामाजिक समर्थन की कमी का सामना करना पड़ता है। लोग उन्हें अपराधी या आलसी मानते हैं, जिससे उनका समाज में समावेश मुश्किल हो जाता है।

6. **भावनात्मक और मानसिक तनाव:** सड़क पर असुरक्षित जीवन, अभाव और हिंसा के कारण ये बच्चे मानसिक तनाव और भावनात्मक समस्याओं का शिकार होते हैं। इसका प्रभाव उनके व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवहार पर पड़ता है, और कई बार ये अपराध और हानिकारक गतिविधियों की ओर झुकाव भी दिखाते हैं।

निष्कर्ष: गली के बच्चों के लिए **सुरक्षा, शिक्षा और स्वास्थ्य** जैसी मूलभूत आवश्यकताएँ सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए सरकार और समाज दोनों को सक्रिय प्रयास करने चाहिए। यदि इन बच्चों को सहयोग, मार्गदर्शन और अवसर दिया जाए तो वे समाज के सकारात्मक और उत्पादक सदस्य बन सकते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

"वैकल्पिक मॉड्यूल-I"

(महिलाओं का सामाजिक स्तर)

प्रश्न 41. विधवा पुनर्विवाह अधिनियम कब पारित हुआ?

(A) 1855

(B) 1856

(C) 1857

(D) 1858

उत्तर - (B) 1856

प्रश्न 42. भारतीय संविधान द्वारा किस अनुच्छेद के माध्यम से लैंगिक भेदभाव पर रोक लगाई गई थी?

(A) अनुच्छेद 15

(B) अनुच्छेद 14

(C) अनुच्छेद 24

(D) अनुच्छेद 31

उत्तर - (A) अनुच्छेद 15

प्रश्न 43. बाल विवाह निरोधक अधिनियम किस वर्ष पारित किया गया था?

(A) 1929

(B) 1976

(C) 1955

(D) 1956

उत्तर - (A) 1929

प्रश्न 44. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

______ एक अवधारणा है, जिसका उपयोग उस स्थिति को समझने के लिए किया जाता है, जिसमें पिता और माता दोनों जिम्मेदारी लेते हैं।

उत्तर - साझा जिम्मेदारी

प्रश्न 45. एक शब्द में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

हिंसा चाहे शारीरिक दुर्व्यवहार के रूप में हो या मानसिक यातना के रूप में, ______ में बर्दाश्त नहीं की जा सकती।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

उत्तर - परिवार

प्रश्न 46. महाराष्ट्र में दलित लड़कियों के लिए सबसे पहले स्कूल किसने चलाया?

(A) महर्षि कर्वे **(B) ज्योतिबा फुले**

(C) डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर **(D) पंडिता रमाबाई**

उत्तर - (B) ज्योतिबा फुले

प्रश्न 47. सही या गलत लिखिए : ईसा पूर्व छठी शताब्दी के आसपास जैन धर्म और बौद्ध धर्म ने जड़ें जमा लीं।

उत्तर - सही ✅

प्रश्न 48. वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति क्या थी?

उत्तर: वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर थी। वे शिक्षा प्राप्त कर सकती थीं, वेद और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कर सकती थीं, और यज्ञ तथा धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। विवाह और सामाजिक कर्तव्यों में उनका योगदान महत्वपूर्ण था। हालांकि, बाद के समय में सामाजिक और धार्मिक नियमों के कड़े होने से उनकी स्वतंत्रता और अधिकार सीमित हो गए।

अथवा

दो धर्मशास्त्रों के नाम बताइए तथा उनकी आचारसंहिता बताइए

उत्तर: दो धर्मशास्त्रों के नाम तथा उनकी आचारसंहिता:-

1. **मनुस्मृति** – इसमें पुरुष और महिला के कर्तव्यों का विवरण दिया गया है। महिलाओं के लिए पति की सेवा, परिवार की देखभाल और सामाजिक कर्तव्यों का पालन करना आवश्यक माना गया।
2. **याज्ञवल्क्य स्मृति** – यह धर्म, सामाजिक नियम और विधि-सम्मत आचरण पर आधारित है। महिलाओं के लिए परिवार में योगदान, पवित्रता बनाए रखना और धार्मिक कर्तव्यों का पालन महत्वपूर्ण माना गया है।

प्रश्न 49. तीन प्रमुख अवधियों के दौरान महिलाओं की स्थिति का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर: तीन प्रमुख अवधियों के दौरान महिलाओं की स्थिति:-

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

1. **वैदिक काल:** वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर थी। वे शिक्षा प्राप्त कर सकती थीं, वेदों और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कर सकती थीं। यज्ञ, धार्मिक अनुष्ठान और कला-कौशल में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। विवाह और सामाजिक कर्तव्यों में उनका योगदान महत्वपूर्ण था।

2. **मध्यकालीन अवधि:** मध्यकाल में सामाजिक और धार्मिक नियम कठोर हो गए। महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित हो गई और शिक्षा पर प्रतिबंध लगाया गया। वे मुख्यतः गृहकार्य और परिवार की देखभाल तक सीमित रह गईं। उनकी सामाजिक और धार्मिक भागीदारी कम हो गई।

3. **आधुनिक काल (19वीं सदी के बाद):** सामाजिक सुधारों और कानूनों के माध्यम से महिलाओं के अधिकार बढ़े। विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 और महिला शिक्षा अधिनियम जैसे कानूनों ने महिलाओं को शिक्षा, समानता और सामाजिक अधिकार प्राप्त करने का अवसर दिया। महिलाएँ धीरे-धीरे सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक क्षेत्र में सक्रिय हुईं।

निष्कर्ष: इन तीन प्रमुख अवधियों में महिलाओं की स्थिति में समय के साथ सुधार और परिवर्तन हुए। वैदिक काल में स्वतंत्रता और शिक्षा अधिक थी, मध्यकाल में प्रतिबंध बढ़े, और आधुनिक काल में सुधार और समानता के प्रयासों से स्थिति बेहतर हुई।

अथवा

लैंगिक समानता की व्याख्या कीजिए। इसे परिवार में कैसे प्राप्त किया जा सकता है? प्रासंगिक उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर: लैंगिक समानता का अर्थ है पुरुष और महिला को समान अधिकार, अवसर और सम्मान मिलना। इसका मतलब है कि समाज और परिवार में दोनों को समान निर्णय लेने, शिक्षा प्राप्त करने और विकास के अवसर मिलने चाहिए।

परिवार में प्राप्ति के उपाय:-

1. बच्चों को समान शिक्षा और खेल के अवसर देना।
2. माता-पिता दोनों घर के कार्यों और बच्चों की देखभाल में बराबर योगदान करें।
3. परिवार में सभी निर्णय लेने में दोनों की राय को बराबरी का अधिकार दें।
4. महिलाओं और पुरुष दोनों को परिवार के निर्णय और सामाजिक गतिविधियों में समान भागीदारी दें।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

“वैकल्पिक मॉड्यूल-II”

(भारतीय संस्कृति)

प्रश्न 41. समय और स्थान के आयाम संस्कृति को बनाते हैं

(A) सीखा हुआ **(B) जीवन जीने का तरीका**

(C) समझदारी **(D) गतिशील**

उत्तर - (D) गतिशील

प्रश्न 42. ज्ञान, विश्वास, नैतिकता, कानून और रीति-रिवाज किसके उदाहरण हैं?

(A) धर्म **(B) संस्कृति**

(C) भौतिक संस्कृति **(D) अभौतिक संस्कृति**

उत्तर - (D) अभौतिक संस्कृति

प्रश्न 43. भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण की स्थापना कब हुई थी?

(A) 1921 **(B) 1916**

(C) 1925 **(D) 1926**

उत्तर – कोई भी विकल्प सही नहीं है। **सही उत्तर 1851 है।**

प्रश्न 44. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

______ भारत के परमाणु विज्ञान के जनक के रूप में जाने जाते हैं।

उत्तर - होमी भाभा

प्रश्न 45. एक शब्द में परिभाषित कीजिए :

किसी विषय का व्यवस्थित रूप से लिखित औपचारिक विवरण।

उत्तर – प्रेक्षण

प्रश्न 46. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

______ प्राचीन भारत के एक प्रसिद्ध गणितज्ञ थे।

उत्तर - आर्यभट्ट

प्रश्न 47. सही या गलत लिखिए :

मुगल बाग-बगीचों के लिए प्रसिद्ध थे।

उत्तर - सही ✅

प्रश्न 48. भारतीय सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए हमारी संस्कृति के किन्हीं दो पहलुओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर - भारतीय सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए हमारी संस्कृति के दो पहलू:-

1. **भौतिक संस्कृति :** इसमें मंदिर, स्तूप, महल, मूर्तियाँ, कलाकृतियाँ और अन्य भौतिक वस्तुएँ शामिल हैं। ये समाज की तकनीकी और कलात्मक प्रगति को दिखाती हैं।
2. **अभौतिक संस्कृति :** इसमें ज्ञान, विश्वास, रीति-रिवाज, नैतिकता, कानून और परंपराएँ शामिल हैं। ये समाज के मूल्यों, आचार और व्यवहार को दर्शाती हैं।

अथवा

कुछ लेखकों के नाम का संक्षेप में उल्लेख कीजिए, जिनकी रचनाएँ विरासत के दायरे में आ गई हैं।

उत्तर - कुछ लेखकों के नाम जिनकी रचनाएँ सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा हैं:-

- **कालिदास :** संस्कृत नाटक और काव्य के प्रसिद्ध कवि।
- **बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय :** साहित्य और राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने वाले लेखक।
- **रवींद्रनाथ ठाकुर :** साहित्य, गीत और संगीत के माध्यम से भारतीय संस्कृति और कला को विश्व पटल पर प्रस्तुत किया।

प्रश्न 49. प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक के योगदानों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - प्राचीन भारत में कई वैज्ञानिकों ने विज्ञान, गणित और चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

1. **आर्यभट्ट :** शून्य और दशमलव पद्धति का आविष्कार किया। खगोल विज्ञान में ग्रहों की गति, पृथ्वी के घूर्णन और सूर्य के चारों ओर ग्रहों के चक्र का अध्ययन किया।

2. **चरक :** आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली का विकास किया। स्वास्थ्य और रोगनिदान में प्रयोग होने वाले सिद्धांत और औषधियाँ तैयार की।

3. **सुश्रुत :** शल्य चिकित्सा और सर्जरी के क्षेत्र में अग्रणी थे। उन्होंने शल्य क्रियाओं और चिकित्सा उपकरणों का विवरण दिया।

4. **भास्कराचार्य :** गणित और खगोल विज्ञान में योगदान दिया। उन्होंने शून्य, दशमलव और ग्रहों की गणना से संबंधित सिद्धांत विकसित किए।

इन वैज्ञानिकों के योगदान ने प्राचीन भारत को विश्व में विज्ञान और गणित के क्षेत्र में अग्रणी बनाया।

अथवा

मानदंडों और मूल्यों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - मानदंडों और मूल्यों के बीच अंतर:-

आधार	मानदंड	मूल्य
परिभाषा	समाज द्वारा बनाए गए व्यवहार के नियम और अपेक्षाएँ	समाज में आदर्श और महत्व दिए जाने वाले सिद्धांत
उद्देश्य	व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करना	सही और महत्वपूर्ण मान्यताओं को दर्शाना
कठोरता	अपेक्षाकृत अनिवार्य और पालन करना जरूरी	अपेक्षाकृत लचीले, आदर्श के रूप में अपनाए जाने वाले
उदाहरण	स्कूल में समय पर आना, नियमों का पालन करना	ईमानदारी, सहानुभूति, समानता का पालन करना

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

NIOS PYQ's SOLUTIONS

PREVIOUS YEARS' QUESTIONS & ANSWERS

OCTOBER-2025

Your Path to Success

खंड - अ

सभी बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1 – संस्थाएँ _________का खाका हैं।

(A) मानवीय क्रियाकलापों

(B) सामाजिक मानदंड

(C) सांस्कृतिक प्रथाएँ

(D) आर्थिक प्रणालियाँ

उत्तर - (A) मानवीय क्रियाकलापों

प्रश्न 2 - समाजीकरण की प्रक्रिया एक _______ है।

(A) एक बार की घटना

(B) आजीवन प्रक्रिया

(C) अल्पकालिक अनुभव

(D) सामूहिक गतिविधि

उत्तर – (B) आजीवन प्रक्रिया

प्रश्न 3 - सामाजिक परिवर्तन का अर्थ है सामाजिक _________ सामाजिक प्रक्रियाओं और सामाजिक संरचना में विविधताओं का संशोधन होना है।

(A) परंपराएँ

(B) प्रतिक्रिया

(C) अंतःक्रियाओं

(D) क्रियाओं

उत्तर – (C) अंतःक्रियाओं

प्रश्न 4 - अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, प्रेस रिपोर्ट, पत्र सभी _____ की तकनीकें हैं।

(A) आँकड़े इकट्ठा करने

(B) घटना विशेष का गहन अध्ययन

(C) संचार

(D) अनुसंधान

उत्तर – (A) आँकड़े इकट्ठा करने

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 5 - नीचे दी गई सूची से उपयुक्त सामुदायिक विशेषताएँ (लक्षण) चुनिए

(A) स्थिर

(B) मूर्त

(C) गतिशील

(D) अमूर्त

उत्तर – (B) मूर्त

प्रश्न 6 - परिवार मूलतः एक _____ समूह है।

(A) एकपक्षीय

(B) मातृसत्तात्कम

(C) पितृसत्तात्मक

(D) द्विपक्षीय

उत्तर – (D) द्विपक्षीय

प्रश्न 7 - सर्वेक्षण का उद्देश्य _____ प्रदान करना है।

(A) राय

(B) सूचना

(C) डाटा विश्लेषण

(D) सुझाव

उत्तर – (B) सूचना

प्रश्न 8 - इरूला, टोडा, बडागा, पेलियन भारत के _____ क्षेत्र में पाए जाते हैं।

(A) उत्तर-पूर्व

(B) पश्चिम

(C) दक्षिण

(D) द्वीपों में रहने वाले समुदाय

उत्तर – (C) दक्षिण

प्रश्न 9 - जाति व्यवस्था एक अनुष्ठान (कर्मकांड) मानदंड पर आधारित है जिसका अर्थ है कि यह _____ पर आधारित है।

(A) आर्थिक

(B) धार्मिक मिथकों

(C) सामाजिक

(D) राजनीतिक

उत्तर – (B) धार्मिक मिथकों

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 10 - चार वर्णों वाली जाति के मॉडल को _____ के नाम से जाना जाता है।

(A) कुल

(B) गोत्र

(C) चतुर्वर्ण

(D) जजमानी

उत्तर – (C) चतुर्वर्ण

प्रश्न 11 – कोचीन के _____ ने कम से कम एक सहस्राब्दी तक अपनी धार्मिक पहचान को दृढ़ता से बनाए रखा है।

(A) बौद्धों

(B) पारसियों

(C) अर्मेनियाइयों

(D) यहूदियों

उत्तर – (D) यहूदियों

प्रश्न 12 - तात्र भूमि में मक्का, मिली, मरवा, तिसी, सरसों आदि की बुवाई _____ विधि से की जाती है।

(A) शुष्क खेती

(B) सीढ़ीनुमा खेती

(C) गीली (आर्द्र) खेती

(D) स्थानांतरित खेती

उत्तर – (D) स्थानांतरित खेती

प्रश्न 13 - समाजशास्त्र मुख्यतः _____ समाजों के अध्ययन से संबंधित है।

(A) प्राचीन

(B) मध्यकालीन

(C) समकालीन

(D) आदिम

उत्तर – (C) समकालीन

प्रश्न 14 - वर्ष _____ में गुलामी पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

(A) 1843

(B) 1842

(C) 1947

(D) 1860

उत्तर – (A) 1843

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 15 - बहुत कम आय होने के कारण दोनों समय के भोजन का खर्च पूरा न कर पाने की स्थिति _____ है।

(A) मानवीय गरीबी

(B) निर्धनता

(C) भ्रष्टाचार

(D) अस्वीकार (इंकार)

उत्तर – (B) निर्धनता

प्रश्न 16 - मंडल आयोग की रिपोर्ट _____ वर्ष में लागू की गई थी।

(A) 1993

(B) 1992

(C) 1999

(D) 2000

उत्तर – (A) 1993

प्रश्न 17 - बाल श्रम में _____ की आयु वर्ग के बच्चे शामिल हैं।

(A) 6 - 12 वर्ष

(B) 5 - 14 वर्ष

(C) 4 - 15 वर्ष

(D) 7 - 16 वर्ष

उत्तर – (B) 5 - 14 वर्ष

प्रश्न 18 - रिक्त स्थान भरिए :

(i) पिता के भाई की पत्नी, पिता की बहन का पति, पिता की माँ का भाई _____ के उदाहरण हैं। (प्राथमिक नातेदार / द्वितीयक नातेदार / तृतीयक नातेदार)

उत्तर – तृतीयक नातेदार

(ii) _____ वह व्यक्ति है जिसके माध्यम से रिश्ते का पता लगाया जाता है। (पिता / माता / चाची / अहंकार)

उत्तर – अहंकार (ईगो)

प्रश्न 19 - रिक्त स्थान भरिए :

(i) प्रत्येक व्यक्ति _____ की स्थिति में एक सामाजिक स्थिति रखता है। (संघर्ष / जीवन का मौका / अंतःक्रिया)

उत्तर – अंतःक्रिया

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(ii) किसी व्यक्ति को उसके जन्म से संबंधित तथ्यों के आधार पर एक पद दिया जाता है जिसे _____ प्रस्थिति कहा जाता है। (प्रदत्त / अर्जित / जाति)

उत्तर – प्रदत्त

प्रश्न 20 - एक शब्द में परिभाषित कीजिए :

(i) वे नियम जो व्यक्तियों को विशेष रिश्तेदारों, ज्ञात या अनुमानित सामान्य वंश के साथ जोड़ते हैं, _____ के नियम कहलाते हैं।

उत्तर – वंशक्रम

(ii) एक _____ सबसे छोटा रिश्तेदारी समूह है।

उत्तर – परिवार

(iii) मातुल संबंध में पिता को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना _____ को दिया जाता है।

उत्तर – मामा

(iv) एकल वंश नियमों के बिना समाज _____ समाज है।

उत्तर – द्विवर्ती

(v) संयुक्त परिवार, जहाँ परिवार के हित को व्यक्ति के हित से अधिक प्राथमिकता दी जाती है, _____ विशेषता प्रदर्शित करता है।

उत्तर – संयुक्त उत्तरदायित्व

प्रश्न 21 - रिक्त स्थान भरिए :

(i) सहेरिया, भील, गरासिया जनजातियाँ भारत के _____ भाग (क्षेत्र) में पाई जाती हैं। (दक्षिण / मध्य / पश्चिम)

उत्तर – पश्चिम

(ii) ग्रामीण समाज अनुष्ठानों के प्रदर्शन के साथ-साथ देवी-देवताओं में विश्वास के प्रति अधिक _____ और पारंपरिक हैं। (भौतिकवादी / रूढ़िवादी / धर्म निरपेक्ष)

उत्तर – रूढ़िवादी

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 22 - सही / गलत बताइए :

(i) कुछ सामाजिकशास्त्री समूहों को 'सामाजिक ईंटें' कहते हैं।

उत्तर – सही

(ii) द्वितीयक समूह का मुख्य कार्य विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करना है।

उत्तर – सही

(iii) वर्ग, जाति और नौकरशाही क्षैतिज समूहों के उदाहरण हैं।

उत्तर – गलत

(कारण : वर्ग, जाति और नौकरशाही ऊर्ध्वाधर समूह है**)**

प्रश्न 23 - निम्न गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

समाज में परिवार के कई तरह के प्रकार्य होते हैं। व्यक्ति और समाज अपनी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परिवार पर निर्भर होते हैं। यदि व्यक्ति और समाज की आवश्यकताएँ उचित ढंग से पूरी नहीं की जाती तो दोनों का जीवित रहना कठिन हो जाता है। इस कारण परिवार द्वारा किए गए प्रकार्य अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

बच्चों का समाजीकरण परिवार का सबसे महत्वपूर्ण प्रकार्य है। जैसे बच्चों की देखभाल करना और उन्हें समाज की संस्कृति के अनुकूल बनाना। समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार यह निश्चित करता है कि बच्चे संस्कृति के भौतिक और अभौतिक पक्षों से परिचित हों। बच्चा परिवार के माध्यम से भाषा, रीति रिवाज, व्यवहार, मानदंड और मूल्य, विश्वास तथा सामाजिक भूमिकाओं को समझता है। ये सब पहलू अभौतिक संस्कृति के अंग हैं। परिवार बच्चों को भौतिक संस्कृति भी देता है। भौतिक संस्कृति का सरोकार खाद्यान्न पैदा करना, मकान बनाना, वाद्य यंत्र बनाना आदि सिखाने से होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया में युवा पीढ़ी को यह सिखाया जाता है।

वास्तव में समाजीकरण के बिना संस्कृति का हस्तांतरण नहीं हो सकता है। संस्कृति का अस्तित्व परिवार द्वारा किए गए समाजीकरण पर निर्भर है।

बच्चों के उचित समाजीकरण के लिए, समाजीकरण करने वाली ऐजेन्सी के सदस्यों जैसे माता, पिता और अन्य रिश्तेदारों का व्यवहार उचित और स्नेहपूर्ण होना चाहिए। ऐसा होने पर ही बच्चा अपने समाज के मानदंडों को पूरी तरह से अपने मन से अपनाता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(i) परिवार का कौन-सा प्रकार्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है और क्यों?

उत्तर – परिवार का महत्वपूर्ण प्रकार्य 'बच्चों का समाजीकरण' है, क्योंकि यह उन्हें समाज की संस्कृति और मानदंडों के अनुकूल बनाकर समाज का उत्तरदायी सदस्य बनाता है।

(ii) समाजीकरण में क्या शामिल है?

उत्तर – समाजीकरण में बच्चों की देखभाल, भाषा, रीति-रिवाज, सामाजिक भूमिकाओं, मूल्यों और भौतिक व अभौतिक संस्कृति को सीखना शामिल है।

(iii) कोई दो उदाहरण देकर भौतिक और अभौतिक संस्कृति में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – भौतिक संस्कृति का उदाहरण 'मकान बनाना' या 'वाद्य यंत्र' है, जबकि अभौतिक संस्कृति का उदाहरण 'रीति-रिवाज' या 'नैतिक मूल्य' हैं।

(iv) संस्कृति का हस्तांतरण समाजीकरण का एक आवश्यक प्रकार्य क्यों है?

उत्तर – संस्कृति का हस्तांतरण आवश्यक है क्योंकि इसके बिना सांस्कृतिक निरंतरता संभव नहीं है और समाज की पहचान नई पीढ़ी तक नहीं पहुँच सकती।

प्रश्न 24 - निम्न के उत्तर दीजिए (दावा / कारण) :

(i) निम्न के आधार पर सही विकल्प चुनिए -

दावा (A) : विकास प्रासंगिक और प्रकृति में सापेक्ष है।

कारण (R) : अतः विकास की धारणा एक समाज से दूसरे समाज में अलग है।

(A) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(B) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।
(C) (A) और (R) दोनों सही हैं।
(D) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

उत्तर – (C) (A) और (R) दोनों सही हैं।

(ii) निम्न के आधार पर सही विकल्प चुनिए -

दावा (A) : यदि मानसून अपर्याप्त हो तो कृषि क्षेत्र में प्रगति धीमी हो जाती है या यदि अगले मौसम में मानसून सामान्य हो तो वृद्धि हो जाती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

कारण (R) : परिवर्तन की प्रवृत्ति परिस्थितियों के अनुकूल और प्रतिकूल ऊपर व नीचे होने पर निर्भर करती है।

(A) (A) सही है लेकिन (R) गलत है। **(B) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।**

(C) (A) और (R) दोनों सही हैं। **(D) (A) और (R) दोनों गलत हैं।**

उत्तर – (C) (A) और (R) दोनों सही हैं।

(iii) निम्न के आधार पर सही विकल्प चुनिए -

दावा (A) : सामाजिक परिवर्तन एक सरल और एक आयामी प्रक्रम है।

कारण (R) : एक क्षेत्र में हुआ परिवर्तन सामाजिक जीवन के दूसरे क्षेत्रों को प्रभावित नहीं करता है।

(A) (A) सही है लेकिन (R) गलत है। **(B) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।**

(C) (A) और (R) दोनों सही हैं। **(D) (A) और (R) दोनों गलत हैं।**

उत्तर – (D) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

(iv) निम्न के आधार पर सही विकल्प चुनिए -

दावा (A) : बाबर ने दीन-ए-इलाही नामक एक राज्य धर्म की अवधारणा का प्रचार किया जो हिंदू धर्म और इस्लाम का संश्लेषण था।

कारण (R) : नए और पुराने मूल्यों के बीच के संघर्ष ने एक बिल्कुल नई मूल्य प्रथा का निर्माण किया।

(A) (A) सही है लेकिन (R) गलत है। **(B) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।**

(C) (A) और (R) दोनों सही हैं। **(D) (A) और (R) दोनों गलत हैं।**

उत्तर – (B) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

प्रश्न 25 - कॉलम A का कॉलम B से मिलान कीजिए :

कॉलम A (शब्द)	**कॉलम B (वर्णन)**
(i) अरबी में मूल शब्द एस.एल.एम. (slm)	**(a) दिगम्बर और श्वेताम्बर**
(ii) सिख शब्द की उत्पत्ति	**(b) का अर्थ शांति में रहना और संपूर्ण होना है**

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(iii) जैन धर्म के भीतर दो समूह	**(c) एकेश्वरवादी आस्था है**
(iv) ईसाई धर्म	**(d) पाली भाषा के शब्द सिख और संस्कृत शब्द शिष्य से हुई है।**

उत्तर –

कॉलम A (शब्द)	**कॉलम B (वर्णन)**
(i) अरबी में मूल शब्द एस.एल.एम. (slm)	(b) का अर्थ शांति में रहना और संपूर्ण होना है
(ii) सिख शब्द की उत्पत्ति	(d) पाली भाषा के शब्द सिख और संस्कृत शब्द शिष्य से हुई है।
(iii) जैन धर्म के भीतर दो समूह	(a) दिगम्बर और श्वेताम्बर
(iv) ईसाई धर्म	(c) एकेश्वरवादी आस्था है

खंड – ब

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 से 120 शब्दों में दीजिए :

प्रश्न 26 - विधि और तकनीक में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – विधि और तकनीक में निम्न अंतर है -

1. विधि – यह शोध का एक व्यापक और व्यवस्थित दृष्टिकोण या कार्य-प्रणाली है। यह शोध के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनाई गई पूरी रणनीति या योजना होती है। विधि का स्तर उच्च और दार्शनिक होता है, जो यह तय करती है कि हमें किस दिशा में आगे बढ़ना है। उदाहरण के लिए 'ऐतिहासिक विधि' या 'तुलनात्मक विधि'।

2. तकनीक – यह शोध कार्य को संपन्न करने के विशिष्ट साधन या उपकरण हैं। ये बहुत छोटे और व्यावहारिक स्तर के होते हैं। तकनीक का उपयोग जमीनी स्तर पर आंकड़ों को इकट्ठा करने और उनकी जाँच करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'साक्षात्कार' (Interview), 'प्रश्नावली' (Questionnaire) या 'अवलोकन' (Observation)।

प्रश्न 27 - सामाजिक स्तरीकरण एक प्रकार की सामाजिक असमानता है। व्याख्या कीजिए।

उत्तर – सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ समाज को विभिन्न स्तरों या श्रेणियों में विभाजित करने की ऐसी व्यवस्था से है, जिसमें व्यक्तियों एवं समूहों को उनकी प्रतिष्ठा, शक्ति और संसाधनों के आधार पर स्थान दिया जाता है। इसे सामाजिक असमानता का एक रूप माना जाता है क्योंकि समाज में संसाधनों, अवसरों और अधिकारों का वितरण समान रूप से नहीं होता। इसमें

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

उच्च स्तर के लोगों के पास अधिक शक्ति, प्रतिष्ठा और सुविधाएँ होती हैं, जबकि निम्न स्तर के लोगों को सीमित अवसर प्राप्त होते हैं। इस प्रकार समाज का यह विभाजन सामाजिक रूप से निर्मित होता है और असमानताओं को बनाए रखता है।

प्रश्न 28 - "परिवार, सामाजिक संगठन की मूल इकाई है।" विस्तार से समझाइए।

उत्तर – परिवार सामाजिक संगठन की सबसे महत्वपूर्ण और बुनियादी इकाई है। यह मानव समाज का आधार बनता है तथा व्यक्तियों को रक्त संबंध, विवाह या दत्तक ग्रहण के माध्यम से जोड़ता है। परिवार व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उसे समाज के मानदंडों, मूल्यों तथा व्यवहारों से परिचित कराता है। यहीं से बालक भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाज और सामाजिक भूमिकाएँ सीखता है। साथ ही, परिवार नई पीढ़ी के पालन-पोषण, सुरक्षा और समाजीकरण का दायित्व निभाकर समाज की निरंतरता और स्थिरता सुनिश्चित करता है।

प्रश्न 29 - (a) पारसी धर्म में पृथ्वी के महत्वपूर्ण स्थान की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – पारसी धर्म में पृथ्वी को अत्यंत पवित्र माना गया है क्योंकि यह मनुष्य मात्र को जीवित रखती है और उसका पालन-पोषण करती है। इस धर्म की मान्यता के अनुसार, मनुष्य का जीवन पृथ्वी के संसाधनों पर निर्भर है, इसलिए मृत्यु के बाद भी व्यक्ति का शरीर पृथ्वी में विलीन हो जाना चाहिए। साथ ही, इस धर्म में मृत शरीर को न जलाने और न ही जल में प्रवाहित करने की परंपरा है, क्योंकि अग्नि और जल दोनों को अत्यंत पवित्र माना जाता है, जिन्हें मृत शरीर द्वारा अपवित्र नहीं किया जा सकता। इसलिए, मृत शरीर को 'दखमा' (टावर ऑफ साइलेंस) में खुला छोड़ दिया जाता है, जहाँ से हड्डियाँ आखिर में पृथ्वी में ही समा जाती हैं।

अथवा

(b) पारसी धर्म में अग्नि का क्या महत्व है?

उत्तर – पारसी धर्म में अग्नि का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, जिसे 'अतर' (Atar) के नाम से जाना जाता है। अग्नि को यहाँ ईश्वर का प्रतीक और एक दिव्य शक्ति माना गया है, जो पूर्ण शुद्धता का प्रतिनिधित्व करती है। इसीलिए पारसी अग्नि को अपवित्र होने से बचाने के लिए अत्यधिक सावधानी बरतते हैं और मंदिर में अग्नि को सदैव प्रज्वलित रखा जाता है, जहाँ उपासक पूजा के लिए जाते हैं। साथ ही, अग्नि को यहाँ ईश्वर और मनुष्यों के बीच का एक माध्यम माना जाता है, जो अंधकार को खत्म कर प्रकाश और सत्य की ओर ले जाने का कार्य करती है।

प्रश्न 30 - सामाजिक नियंत्रण शब्द से आप क्या समझते हैं?

उत्तर – सामाजिक नियंत्रण का अर्थ उस व्यवस्था से है, जिसके द्वारा समाज अपने सदस्यों के व्यवहार को विनियमित करता है ताकि सामाजिक मूल्यों का पालन सुनिश्चित हो सके। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में व्यवस्था बनाए रखना, संघर्षों को कम करना और समूह के भीतर अनुशासन व एकता को स्थापित करना है। यह नियंत्रण अनौपचारिक (जैसे परंपराएं, रीति-रिवाज, लोकरीतियाँ) या औपचारिक (जैसे कानून, पुलिस, न्यायालय) तरीकों से हो सकता है, जो व्यक्तियों को समाज विरोधी

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

कार्यों से रोकते हैं। साथ ही, इसे एक अदृश्य शक्ति माना जाता है, जो समाज में एक संतुलित सामाजिक संरचना बनाए रखने में मदद करती है।

प्रश्न 31 - (a) संस्कृतीकरण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – संस्कृतीकरण वह सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से कोई निम्न जाति या जनजाति अपनी सामाजिक स्थिति को ऊँचा करने के लिए किसी उच्च जाति के रीति-रिवाजों, धार्मिक विश्वासों और जीवनशैली को अपनाते हैं। इस अवधारणा समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास द्वारा दी गई थी, जो यह स्पष्ट करती है कि सामाजिक पदानुक्रम में अपनी स्थिति सुधारने के लिए समूह अक्सर उच्च जातियों के खान-पान, पहनावे, भाषा और अनुष्ठानों की नकल करते हैं। इससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा और पहचान में परिवर्तन आ सकता है, हालाँकि इससे जाति व्यवस्था की मूल संरचना में कोई बदलाव नहीं होता।

अथवा

(b) किसी जाति के संस्कृतीकरण के लिए आवश्यक तीन शर्तें क्या हैं?

उत्तर – किसी जाति के संस्कृतीकरण के लिए निम्न तीन शर्तें आवश्यक हैं –

1. जाति के लोगों में अपनी सामाजिक स्थिति को सुधारने और उच्च स्थान प्राप्त करने की इच्छा तथा प्रयास करने की मानसिक तैयारी होना आवश्यक है।

2. उस जाति की आर्थिक स्थिति पर्याप्त मजबूत होनी चाहिए, ताकि वे उच्च जातियों के रीति-रिवाज, रहन-सहन और जीवनशैली को अपनाकर बनाए रख सकें।

3. किसी उच्च या प्रभावशाली जाति के साथ निकट संपर्क होना चाहिए, जिससे उनके व्यवहार, परंपराओं और सांस्कृतिक प्रथाओं को सीखकर अपनाया जा सके।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में दीजिए :

प्रश्न 32 - (a) व्यवहारिक समाजशास्त्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - समाजशास्त्र की वह शाखा, जिसमें सिद्धांतों, अवधारणाओं और शोध निष्कर्षों का उपयोग सामाजिक समस्याओं को समझने तथा उनके समाधान के लिए किया जाता है, व्यावहारिक समाजशास्त्र कहलाता है। इसका उद्देश्य केवल सिद्धांतों का अध्ययन करना नहीं, बल्कि लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना भी है। इसके बिंदु निम्नलिखित हैं –

1. सामाजिक समस्याओं का समाधान : व्यवहारिक समाजशास्त्र गरीबी, बेरोजगारी, अपराध, बाल-श्रम, नशाखोरी और जातिगत भेदभाव जैसी समस्याओं के कारणों का अध्ययन करके उनके व्यावहारिक समाधान सुझाता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. नीति निर्माण में भूमिका : यह सरकार तथा गैर-सरकारी संगठनों को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप योजनाएँ और नीतियाँ बनाने में सहायता प्रदान करता है, जिससे उनका लाभ अधिक लोगों तक पहुँच सके।

3. सामाजिक हस्तक्षेप : यह केवल अध्ययन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समुदायों, विद्यालयों और कार्यस्थलों में सुधार कार्यक्रमों को लागू करने तथा लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए सक्रिय रूप से कार्य करता है।

अथवा

(b) सामाजिक मनोविज्ञान क्या है?

उत्तर – मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के बीच की वह अध्ययन शाखा, जो यह समझती है कि सामाजिक वातावरण, समूह और अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति से किसी व्यक्ति के विचार, भावनाएँ और व्यवहार किस प्रकार प्रभावित होते हैं, सामाजिक मनोविज्ञान कहलाती है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति और समाज के बीच की पारस्परिक क्रियाओं को समझना है। इसके मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं –

1. व्यक्ति और समाज का अंतर्संबंध : सामाजिक मनोविज्ञान यह अध्ययन करता है कि व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण से कैसे प्रभावित होता है तथा समाज के साथ तालमेल स्थापित करते हुए अपनी पहचान का विकास कैसे करता है।

2. सामाजिक प्रभाव और अनुकूलन : यह अध्ययन करता है कि समूह, नेतृत्व, जनमत और साथियों का दबाव व्यक्ति के विचारों, निर्णयों तथा व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करता है।

3. व्यवहार की व्याख्या : यह विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्तियों की प्रतिक्रियाओं और व्यवहार की जाँच करता है तथा यह समझने का प्रयास करता है कि लोग अलग-अलग परिस्थितियों में अलग तरीके से व्यवहार क्यों करते हैं।

प्रश्न 33 - (a) सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक असमानता की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक असमानता समाजशास्त्र की दो महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं जो समाज की संरचना को समझने में मदद करती हैं -

1. सामाजिक स्तरीकरण : यह सामाजिक असमानता का एक व्यवस्थित और संगठित स्वरूप है। जब असमानता समाज में पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनी रहती है और एक निश्चित 'पदानुक्रम' (Hierarchy) या परतों का रूप ले लेती है, तो उसे स्तरीकरण कहते हैं। इसमें समाज विभिन्न श्रेणियों में विभाजित होता है, जहाँ ऊपरी परतों के पास अधिक अधिकार और सम्मान होता है, जबकि निचली परतों के पास न्यूनतम।

2. सामाजिक असमानता : यह एक व्यापक अवधारणा है, जिसका तात्पर्य समाज में व्यक्तियों या समूहों के बीच संसाधनों, अवसरों, शक्ति और पुरस्कारों के असमान वितरण से है। साथ ही, असमानता तब होती है जब समाज में सभी को समान

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

अवसर या सुख-सुविधाएं नहीं मिलतीं। यह प्राकृतिक या सामाजिक हो सकती है, जहाँ आयु, लिंग या शारीरिक क्षमता के आधार पर लोगों के बीच अंतर देखा जाता है।

अथवा

(b) सामाजिक स्तरीकरण सार्वभौमिक नहीं है। इसका औचित्य सिद्ध कीजिए।

उत्तर – समाजशास्त्र में सामाजिक स्तरीकरण के सार्वभौमिक होने के विषय पर हमेशा से विवाद रहा है। कुछ विचारक इसे सार्वभौमिक मानते हैं, लेकिन इसके विरुद्ध इसे सार्वभौमिक न मानने के आधार निम्न हैं –

1. आदिम समाजों का उदाहरण : कई सरल और छोटे शिकार करने वाले या भोजन इकट्ठा करने वाले समाजों (जैसे कुछ जनजातीय समूह) में स्तरीकरण का अभाव होता है। यहाँ सभी सदस्य समान होते हैं और किसी के पास न तो अधिक संपत्ति होती है और न ही दूसरों पर शासन करने की कोई स्थायी शक्ति।

2. साम्यवाद की अवधारणा : कुछ विचारधाराओं (जैसे मार्क्सवाद) के अनुसार, एक आदर्श समाज वह है जहाँ वर्ग और स्तरीकरण समाप्त हो जाएं। यदि एक ऐसे समाज की कल्पना की जा सकती है जहाँ उत्पादन के साधनों पर सबका समान स्वामित्व हो, तो यह सिद्ध होता है कि स्तरीकरण कोई अनिवार्य आवश्यकता नहीं है।

3. कार्यक्षमता बनाम शोषण : यदि स्तरीकरण केवल कार्य के विभाजन के लिए होता, तो इसे अनिवार्य माना जा सकता था। लेकिन चूँकि अधिकांश समाजों में स्तरीकरण 'शोषण' और 'अधिकारों के असमान वितरण' का साधन बन गया है, इसलिए इसे केवल एक सामाजिक निर्माण माना जाता है, न कि कोई सार्वभौमिक नियम।

प्रश्न 34 - वर्ण और जाति में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – वर्ण और जाति के बीच मुख्य अंतर इस प्रकार हैं –

मुख्य अंतर	वर्ण	जाति
मूल संरचना	यह समाज को चार मुख्य वर्गों में बाँटता है - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।	इनकी संख्या हजारों में है, जिसमें कई उप-जातियां भी शामिल हैं।
आधार	व्यक्ति के गुण और कर्म पर आधारित है।	व्यक्ति के जन्म और वंश पर आधारित है।
व्यापकता और सीमा	यह पूरे समाज के लिए एक सामान्य और समान वर्गीकरण का ढाँचा है।	यह अलग-अलग क्षेत्रों में अलग रूपों में पाई जाती है और स्थानीय होती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 35 - अनुसूचित जातियाँ कौन हैं? भारत के संविधान में शामिल होने के बाद उन्हें मिलने वाले लाभों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर – जिन जातियों और समूहों को ऐतिहासिक रूप से सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़ेपन तथा भेदभाव का सामना करना पड़ा है, उन्हें अनुसूचित जातियाँ कहा जाता है। भारतीय संविधान के अनुसार इन समूहों को विशेष सुरक्षा और विकास के अवसर प्रदान किए गए हैं ताकि वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकें। इन्हें मिलने वाले लाभ निम्नलिखित हैं -

1. आरक्षण की सुविधा : अनुसूचित जातियों के लिए सरकारी नौकरियों, लोक सभा एवं राज्य विधानसभाओं के साथ-साथ सरकारी शिक्षण संस्थानों में भी सीटों का आरक्षण सुनिश्चित किया गया है, ताकि वे हर क्षेत्र में इनका प्रतिनिधित्व बढ़े।

2. संवैधानिक सुरक्षा और संरक्षण : अनुच्छेद 17 के तहत 'अस्पृश्यता' का उन्मूलन कर दिया गया है। साथ ही, इनके विरुद्ध होने वाले भेदभाव को रोकने के लिए 'अत्याचार निवारण अधिनियम' जैसे कठोर कानून बनाए गए हैं।

3. शैक्षणिक और विकास कार्यक्रम : इन वर्गों के बच्चों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार विशेष छात्रवृत्ति योजनाएं, छात्रावास की सुविधा, कौशल विकास कार्यक्रम चलाती है और आर्थिक सहायता भी प्रदान करती है।

प्रश्न 36 - (a) सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में लोकाचार (रूढ़ियों) की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – समाजशास्त्र में, लोकाचार (रूढ़ियों) वे नैतिक मानदंड या नियम होते हैं जो किसी समाज के जीवन-मूल्यों को गहराई से प्रभावित करते हैं और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से सामाजिक नियंत्रण इस प्रकार से होता है -

1. नैतिक आचरण का निर्धारण : लोकाचार व्यक्ति के नैतिक आचरण से संबंधित होते हैं। ये समाज में 'क्या सही है' और 'क्या गलत है' (जैसे- ईमानदारी, सत्य बोलना, बड़ों का सम्मान) के स्पष्ट मानक तय करते हैं।

2. सामूहिक हित और व्यवस्था : इनका निर्माण समाज के सामूहिक कल्याण और व्यवस्था को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सोच-समझकर किया गया है। ये अनैतिक या समाज-विरोधी कार्यों को रोकने के लिए कार्य करते हैं।

3. दंड का प्रावधान : लोकाचारों का उल्लंघन समाज के लिए अस्वीकार्य माना जाता है। इनकी अवहेलना करने वाले व्यक्ति को समाज में कड़ी निंदा, बहिष्कार या सामाजिक दंड का सामना करना पड़ता है।

अथवा

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(b) धर्म को सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में समझाइए।

उत्तर – समाजशास्त्र में धर्म को केवल पूजा-पाठ या धार्मिक कृत्यों तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि इसे सामाजिक व्यवहारों को नियंत्रित करने वाली एक व्यवस्था के रूप में देखा जाता है। सामाजिक नियंत्रण में धर्म की भूमिका इन बिंदुओं से समझी जा सकती है –

1. पाप और पुण्य की अवधारणा : धर्म यह विश्वास स्थापित करता है कि अच्छे कार्यों का फल पुण्य और बुरे कार्यों का परिणाम पाप होता है। इस कारण लोग गलत कार्यों से बचने का प्रयास करते हैं।

2. आचरण संहिता का निर्धारण : धर्म जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे परिवार, विवाह और सामाजिक व्यवहार के लिए नियम और परंपराएँ निर्धारित करता है, जिन्हें लोग पालन करना अपना कर्तव्य मानते हैं।

3. सामुदायिक एकता : धार्मिक उत्सव, पूजा और प्रार्थनाएँ लोगों को एक साथ लाती हैं, जिससे समाज में एकता, सहयोग और सामूहिकता की भावना मजबूत होती है।

प्रश्न 37 - (a) परिवार समाजीकरण के एजेंट के रूप में कैसे कार्य करता है इसका उल्लेख कीजिए।

उत्तर – समाजीकरण के एजेंट के रूप में परिवार निम्न रूप से कार्य करता है –

1. प्राथमिक संबंध और भावनात्मक जुड़ाव : जन्म के समय बच्चा पूरी तरह से परिवार पर निर्भर होता है। माता-पिता और अन्य सदस्यों के साथ उसका गहरा भावनात्मक संबंध बनता है, जो उसे सुरक्षा और अपनापन प्रदान करता है। इसी के माध्यम से वह समाज में संबंध बनाने की प्रारंभिक समझ विकसित करता है।

2. व्यवहार और आदतों का निर्माण : बच्चा अपने परिवार के सदस्यों के व्यवहार, बोलने के तरीके और दैनिक क्रियाओं को देखकर सीखता है। वह धीरे-धीरे इनकी नकल करता है, जिससे उसके शिष्टाचार, नैतिक मूल्य, भाषा और दैनिक जीवन की आदतों का निर्माण होता है।

3. सामाजिक भूमिकाओं का ज्ञान : परिवार के भीतर रहकर बच्चा विभिन्न भूमिकाओं जैसे पुत्र, पुत्री, भाई और बहन को समझता है। वह इन भूमिकाओं से जुड़े अधिकारों और जिम्मेदारियों को सीखता है। साथ ही, खेल और पारिवारिक गतिविधियों के माध्यम से उसे अनुशासन का ज्ञान भी प्राप्त होता है।

अथवा

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(b) इस बात की जाँच कीजिए कि समाज को किस हद तक समाजीकरण का एजेंट माना जाता है।

उत्तर – समाज को समाजीकरण का एजेंट माना जाता है क्योंकि -

1. सांस्कृतिक मानकों का प्रसार : समाज अपने नियमों, परंपराओं, रीति-रिवाजों और मूल्यों के माध्यम से व्यक्ति को यह सिखाता है कि किस प्रकार का व्यवहार स्वीकार्य है और किस प्रकार का नहीं। यह प्रक्रिया व्यक्ति के सोचने और व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित करती है।

2. अनौपचारिक शिक्षा का वातावरण : समाज में व्यक्ति दैनिक जीवन की भाषा, पहनावा, खान-पान और सामाजिक व्यवहार को दूसरों से देखकर और अनुभव करके सीखता है। इसी सामाजिक वातावरण में वह अपनी विभिन्न भूमिकाओं जैसे नागरिक, मित्र और पड़ोसी को समझता है।

3. पुरस्कार और दंड की व्यवस्था : समाज व्यक्ति के व्यवहार को सामाजिक स्वीकृति और अस्वीकृति के माध्यम से नियंत्रित करता है। इसमें अच्छे व्यवहार पर प्रशंसा और गलत व्यवहार पर आलोचना या बहिष्कार व्यक्ति को सामाजिक नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित करता है।

प्रश्न 38 - समूह और समुदाय में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – समूह और समुदाय में अंतर निम्न प्रकार से है -

अंतर का आधार	समूह	समुदाय
निर्माण का आधार	समूह का निर्माण किसी विशिष्ट उद्देश्य की के लिए किया जाता है।	समुदाय स्वाभाविक और प्राकृतिक रूप से विकसित होते हैं।
भौगोलिक क्षेत्र	समूह के सदस्यों के लिए किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में रहना अनिवार्य नहीं है।	समुदाय एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र से संबंधित होता है।
अवधि	समूह अस्थायी हो सकते हैं और उद्देश्य पूरा होते ही समाप्त हो सकते हैं।	समुदाय अधिक स्थायी और दीर्घकालिक होते हैं।
विस्तार	समूह, समुदाय का एक छोटा हिस्सा या अंग हो सकते हैं।	एक समुदाय के भीतर अनेक समूह रह सकते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 से 500 शब्दों में दीजिए :

प्रश्न 39 - (a) अनुसूचित जनजातियों की विशिष्ट विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर – भारत में 'अनुसूचित जनजातियाँ' वे समूह हैं जो मुख्यधारा के समाज से अलग, विशिष्ट भौगोलिक और सांस्कृतिक परिवेश में निवास करते हैं। इनकी अपनी एक स्वतंत्र पहचान और जीवन-पद्धति होती है। इनकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1. विशिष्ट भौगोलिक निवास : अनुसूचित जनजातियाँ मुख्य रूप से पहाड़ी क्षेत्रों, घने जंगलों, मरुस्थलों और दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में निवास करती हैं। इन क्षेत्रों का संपर्क सामान्य समाज से सीमित होता है, जिसके कारण इनके जीवन में बाहरी प्रभाव कम देखने को मिलता है और ये अपनी परंपरागत जीवन शैली को बनाए रखते हैं।

2. सांस्कृतिक पृथकता : इन जनजातियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनकी अलग सांस्कृतिक पहचान होती है। इनकी अपनी भाषा, रीति-रिवाज, परंपराएँ, त्योहार, नृत्य और धार्मिक विश्वास होते हैं। ये अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं, जिससे इनकी अलग पहचान बनी रहती है और सामाजिक विविधता दिखाई देती है।

3. आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था : अनुसूचित जनजातियों की प्रमुख विशेषता उनकी आत्मनिर्भर आर्थिक व्यवस्था है, जिसमें वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति पर निर्भर रहते हैं। ये लोग शिकार, मछली पकड़ने, फल-संग्रह और कृषि के माध्यम से जीवन यापन करते हैं। यहाँ आर्थिक उद्देश्य मुख्य रूप से आवश्यकताओं की पूर्ति होता है।

3. सरल सामाजिक संगठन : इन जनजातियों की सामाजिक संरचना सरल होती है और यह मुख्य रूप से परिवार तथा नातेदारी संबंधों पर आधारित होती है। इनमें जटिल सामाजिक वर्गीकरण या कठोर जाति व्यवस्था नहीं पाई जाती, जिससे इनके भीतर सामुदायिक सहयोग और समानता की भावना बनी रहती है।

5. स्वतंत्र राजनीतिक एवं धार्मिक व्यवस्था : इनकी एक विशेषता यह भी है कि इनके अपने स्थानीय मुखिया होते हैं जो सामाजिक नियमों का पालन करवाते हैं और विवादों का समाधान करते हैं। साथ ही इनके धार्मिक विश्वास प्रकृति पूजा, पूर्वजों की आराधना और टोटम पर आधारित होते हैं, जिसमें पेड़, पहाड़ और नदियों को पवित्र माना जाता है।

अथवा

(b) जनजातीय पहचान और जीवन में परिवर्तन के मुख्य कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर – जनजातीय समुदाय लंबे समय से अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के साथ अलग रहे है। लेकिन आधुनिक समय में बाहरी दुनिया से संपर्क बढ़ने के कारण इनके जीवन और पहचान में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं, जिसके कारण निम्न है –

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

1. खनिज संसाधन और औद्योगीकरण का प्रभाव : जनजातीय क्षेत्रों में खनिज संसाधनों की उपलब्धता के कारण वहाँ उद्योग, खनन और बड़े विकास कार्य स्थापित किए गए हैं। परिणामस्वरूप, कई आदिवासी अपने पारंपरिक भूमि और संसाधनों से विस्थापित हो गए हैं, जिससे उनकी आजीविका प्रभावित हुई है और पारंपरिक जीवन-व्यवस्था कमजोर हुई है।

2. सांस्कृतिक संपर्क और धर्मांतरण : बाहरी लोगों और मिशनरियों के संपर्क में आने से जनजातीय समाज की संस्कृति में बदलाव आया है। कई लोगों ने नए धर्म अपनाए हैं, जिससे उनके पारंपरिक त्योहार, रीति-रिवाज और सामाजिक संस्थाएँ प्रभावित हुई हैं और उनकी मूल सांस्कृतिक पहचान में परिवर्तन दिखाई देने लगा है।

3. आवागमन और संचार का विकास : सड़कों, रेलमार्गों और संचार साधनों के विकास से जनजातीय क्षेत्र बाहरी दुनिया से जुड़ गए हैं। इसके कारण लोगों का संपर्क बढ़ा है और वे आधुनिक वस्तुओं व जीवन-शैली को अपनाने लगे हैं, जिससे उनकी पारंपरिक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था पर असर पड़ा है।

4. सरकारी नीतियाँ और प्रशासनिक व्यवस्था : सरकार की शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास योजनाओं ने जनजातीय समाज को मुख्यधारा से जोड़ा है। हालाँकि इससे लाभ भी हुआ है, लेकिन उनकी पारंपरिक राजनीतिक व्यवस्था कमजोर हुई है और वे आधुनिक प्रशासनिक प्रणाली पर अधिक निर्भर हो गए हैं।

5. विस्थापन और शहरीकरण : विकास परियोजनाओं और जंगलों के उपयोग में बदलाव के कारण अनेक आदिवासी अपने क्षेत्रों से विस्थापित होकर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। वहाँ वे अक्सर असंगठित क्षेत्रों में काम करते हैं, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न 40 - (a) रिश्तेदारी के कार्यों को सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर – रिश्तेदारी (Kinship) न केवल परिवार के सदस्यों के बीच रक्त और विवाह के संबंधों को परिभाषित करती है, बल्कि यह एक व्यक्ति को समाज में निश्चित स्थान, सुरक्षा और दायित्व प्रदान करती है। समाज के सुचारू संचालन में इसके मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं –

1. सामाजिक पहचान और प्रस्थिति : रिश्तेदारी व्यक्ति को समाज में एक निश्चित पहचान और सामाजिक स्थान प्रदान करती है। माता, पिता, भाई या बहन जैसे संबंध व्यक्ति की भूमिका और कर्तव्यों को स्पष्ट करते हैं, जिससे वह समाज में अपनी स्थिति को समझ पाता है और उसके अधिकार भी निर्धारित होते हैं।

2. सुरक्षा एवं सहायता प्रणाली : संकट के समय में रिश्तेदार सबसे पहले सहायता के लिए आगे आते हैं। आवश्यकता पड़ने पर रिश्तेदार आर्थिक, भावनात्मक और सामाजिक सहयोग देते हैं। यह व्यवस्था व्यक्ति को सुरक्षा का भाव देती है और कठिन परिस्थितियों में उसे मानसिक तथा सामाजिक सहारा प्रदान करके जीवन को स्थिर बनाती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3. वंश और उत्तराधिकार का निर्धारण : रिश्तेदारी व्यवस्था परिवार के वंश को आगे बढ़ाने और संपत्ति के सही हस्तांतरण में सहायता करती है। यह यह सुनिश्चित करती है कि पारिवारिक नाम, परंपराएँ और संपत्ति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक व्यवस्थित रूप से स्थानांतरित हों और पारिवारिक संरचना बनी रहे।

4. वैवाहिक संबंधों का नियमन : रिश्तेदारी समूह ही विवाह के संबंधों को नियंत्रित करते हैं। रिश्तेदारी के नियम ही यह निर्धारित करते हैं कि विवाह किस समूह के भीतर करना है (अंतर्विवाह) और किस समूह के बाहर (बहिर्विवाह)। यह व्यवस्था विवाह में पवित्रता और अनुशासन बनाए रखने में सहायक है।

5. संस्कारों और अनुष्ठानों में भागीदारी : जन्म, विवाह और मृत्यु जैसे जीवन के महत्वपूर्ण संस्कारों के समय नातेदार समूह संगठित होकर भाग लेता है। एक ही गोत्र या वंश के लोग सामान्य पूजा-पाठ और संस्कारों में सम्मिलित होकर आपसी संबंधों में मजबूती लाते हैं और समूह की एकता को बनाए रखते हैं।

अथवा

(b) समाज में प्रकट होने वाली पाँच नातेदारी व्यवहार या रीतियों को सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर – नातेदारी व्यवहार उन निश्चित आचरणों और नियमों को दर्शाते हैं जो नातेदारों के बीच आपसी संबंधों को सुव्यवस्थित रखते हैं। समाज में प्रकट होने वाली पाँच प्रमुख नातेदारी व्यवहार या रीतियाँ निम्नलिखित हैं –

1. परिहार (Avoidance) : यह एक ऐसी रीति है जिसमें दो नातेदारों के बीच शारीरिक और सामाजिक दूरी बनाए रखना अनिवार्य होता है। इसमें एक-दूसरे के साथ सीधे संपर्क या बातचीत करने पर प्रतिबंध होता है। उदाहरण के लिए, सास और दामाद या बहू और ससुर के बीच दूरी बनाए रखना।

2. परिहास संबंध (Joking Relationship) : यह परिहार के बिल्कुल विपरीत है। इसमें नातेदारों के बीच हंसी-मजाक की अनुमति होती है। यह संबंध दो व्यक्तियों के बीच एक निश्चित छूट देता है, जहाँ वे एक-दूसरे का मजाक उड़ा सकते हैं और दूसरा व्यक्ति बुरा नहीं मानता। जैसे- देवर और भाभी के बीच का संबंध।

3. मातुल संबंध (Avunculate) : यह रीति मुख्य रूप से मातृवंशीय समाजों में पाई जाती है। इसमें मामा और भानजे/भानजी के बीच एक विशेष और महत्वपूर्ण संबंध होता है। इस व्यवस्था में मामा परिवारिक निर्णयों में निर्णायक भूमिका निभाता है और अपने भानजे-भानजी के लिए स्नेह व सुरक्षा का पात्र होता है।

4. पितृष्वसा अधिकार (Amital) : यह मातुल संबंध के विपरीत है, जहाँ पिता की बहन (बुआ) को एक विशेष स्थान और अधिकार प्राप्त होता है। यह विशेष रूप से पितृवंशीय परिवारों में देखा जाता है, जहाँ बुआ की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और कुछ विशेष संस्कारों में उनकी सहमति या उपस्थिति अनिवार्य होती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5. कुवेद (Couvade) : यह एक ऐसी रीति है जिसमें पत्नी के प्रसव पीड़ा के दौरान पति भी कुछ विशेष नियमों का पालन करता है। पति उस अवधि में पत्नी जैसा भोजन करता , कुछ कार्यों से परहेज करता है और प्रतीकात्मक रूप से वही अनुभव साझा करता है, जिससे सामाजिक और पारिवारिक एकता का भाव प्रकट होता है।

वैकल्पिक मॉड्यूल - I

प्रश्न 41 - महाराष्ट्र के एक प्रमुख सुधारक ज्योतिबा फुले ने अपना जीवन _____ के हित के लिए समर्पित कर दिया।

(A) लड़कियों की शिक्षा

(B) अन्य पिछड़ा वर्ग

(C) अस्पृश्य

(D) महिलाओं

उत्तर – (D) महिलाओं

प्रश्न 42 - लिंग शब्द का प्रयोग _____ के लिए नहीं किया जा सकता।

(A) सामाजिक भूमिकाएँ और पहचान

(B) सांस्कृतिक अपेक्षाएँ

(C) जैविक अंतर

(D) लिंग मानदंड

उत्तर – (C) जैविक अंतर

प्रश्न 43 - एक विचारधारा जो लिंग असमानता के अस्तित्व को मान्यता देती है और उसी _____ के खिलाफ़ विरोध करती है। (एक शब्द में परिभाषित कीजिए)

उत्तर – महिलावाद

प्रश्न 44 - एक परिवार जहाँ पिता के पास शक्ति और अधिकार होता है उसे _____ कहा जाता है। (रिक्त स्थान भरिए)

उत्तर – पितृसत्तात्मक परिवार

प्रश्न 45 - ______ के प्रयासों से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित हुआ।

(A) महर्षि कर्वे

(B) ज्योतिबा फुले

(C) ईश्वरचंद्र विद्यासागर

(D) पंडिता रमाबाई

उत्तर – (C) ईश्वरचंद्र विद्यासागर

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 46 - हमारी संस्कृति ने समय के साथ पुरुषों और महिलाओं की कई _____ छवियाँ बनाई हैं। (रूढिवादी / यथार्थवादी / तटस्थ) (रिक्त स्थान भरिए)

उत्तर – रूढ़िवादी

प्रश्न 47 - पूरी दुनिया में, धर्म का मानव व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ा है। (सही / गलत)

उत्तर – सही

प्रश्न 48 - (a) लिंग और लैंगिक भेदभाव के बीच का अंतर सामाजिक अपेक्षाओं और भूमिकाओं को किस प्रकार प्रभावित करता है?

उत्तर – लिंग (Sex) और लैंगिक भेदभाव (Gender) के बीच का अंतर सामाजिक अपेक्षाओं और भूमिकाओं को गहराई से प्रभावित करता है। लिंग जैविक अंतर को दर्शाता है, जबकि लैंगिक भूमिकाएँ समाज द्वारा तय की जाती हैं। इसी आधार पर समाज पुरुषों से साहस, शक्ति और कमाने की अपेक्षा करता है, जबकि महिलाओं से घर की जिम्मेदारी, देखभाल और विनम्रता की अपेक्षा की जाती है। यह भेदभाव कार्यों के विभाजन को भी निर्धारित करता है, जिससे व्यक्ति अपनी क्षमता के बजाय सामाजिक मान्यताओं के अनुसार भूमिकाएँ निभाने के लिए बाध्य हो जाता है।

अथवा

(b) समाज में प्रचलित लैंगिक भेदभाव के कोई दो रूप बताइए।

उत्तर – समाज में प्रचलित लैंगिक भेदभाव के कोई दो रूप निम्न है –

1. श्रम का लैंगिक विभाजन : समाज में कार्य का बँटवारा योग्यता के बजाय लिंग के आधार पर किया जाता है। पुरुषों को बाहर जाकर कमाने की जिम्मेदारी दी जाती है, जबकि महिलाओं को घरेलू कार्यों, बच्चों की देखभाल और रसोई तक सीमित रखा जाता है।

2. शिक्षा और अवसरों में असमानता : अनेक परिवारों में लड़कों की शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि उन्हें परिवार का सहारा माना जाता है। इसके विपरीत लड़कियों की शिक्षा को कम प्राथमिकता दी जाती है।

प्रश्न 49 - (a) लिंग भेदभाव को बढ़ावा देने में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की भूमिका को संक्षेप में समझाइए।

उत्तर – लिंग भेदभाव समाज में कई सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से विकसित और मजबूत होता है। आज कानून समानता का समर्थन करता है, फिर भी परिवार, धर्म, शिक्षा और आर्थिक संस्थाएँ परंपरागत सोच के कारण कहीं न कहीं इस भेदभाव को बढ़ावा देने में निम्न भूमिका निभा रही हैं –

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

1. परिवार की भूमिका : परिवार में बच्चों को बचपन से ही अलग-अलग भूमिकाओं के अनुसार तैयार किया जाता है। लड़कों को निर्णय लेने, बाहर के कार्यों और आर्थिक जिम्मेदारियों के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जबकि लड़कियों को घरेलू कार्य, देखभाल और सेवा से जुड़े कार्य सिखाए जाते हैं। इससे दोनों के प्रति अलग सामाजिक अपेक्षाएँ विकसित होती हैं और असमानता की भावना मजबूत होती है।

2. धार्मिक संस्थाओं की भूमिका : धार्मिक परंपराएँ और व्याख्याएँ कई बार महिलाओं की भूमिका को सीमित करती हैं। कुछ रीति-रिवाजों में महिलाओं को धार्मिक कार्यों से दूर रखा जाता है या उन्हें कम महत्वपूर्ण माना जाता है। इससे समाज में यह धारणा मजबूत होती है कि पुरुषों की स्थिति महिलाओं से अधिक महत्वपूर्ण है।

3. शिक्षा संस्थाओं की भूमिका : शिक्षा व्यवस्था बच्चों के विचारों और दृष्टिकोण को आकार देती है। कई बार पाठ्य-पुस्तकों और शैक्षिक सामग्री में पुरुषों को नेतृत्व और रोजगार से जोड़कर दिखाया जाता है, जबकि महिलाओं को

घरेलू भूमिकाओं से। इससे बच्चों के मन में पारंपरिक धारणाएँ बनती हैं और वे कुछ व्यवसायों को केवल पुरुषों या महिलाओं के लिए उपयुक्त मानने लगते हैं।

4. आर्थिक संस्थाओं की भूमिका : आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं के कार्य को अक्सर पुरुषों के कार्य की तुलना में कम महत्व दिया जाता है। रोजगार, पदोन्नति और वेतन के अवसरों में भी असमानता देखने को मिल सकती है। इसके अलावा, घरेलू कार्यों को आर्थिक मूल्य न मिलने के कारण महिलाओं के योगदान को पर्याप्त मान्यता नहीं मिलती, जिससे लैंगिक असमानता बनी रहती है।

अथवा

(b) महिलावाद को परिभाषित कीजिए और इसके मुख्य उद्देश्य बताइए।

उत्तर – महिलावाद का तात्पर्य उस विचारधारा और सामाजिक आंदोलन से है, जो महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार, अवसर और सम्मान दिलाने का समर्थन करता है तथा समाज में मौजूद लैंगिक भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास करता है। इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विरोध : महिलावाद उस सामाजिक व्यवस्था का विरोध करता है जिसमें परिवार और समाज में पुरुष को अधिक अधिकार और नियंत्रण दिया जाता है। यह इस सोच को गलत मानता है कि महिलाएँ पुरुषों से कम महत्वपूर्ण हैं और उनके निर्णय हमेशा पुरुषों के अधीन होने चाहिए। इसका उद्देश्य इसी संरचना को बदलना है।

2. लैंगिक समानता की स्थापना : महिलावाद का उद्देश्य ऐसा समाज बनाना है जहाँ स्त्री और पुरुष को समान अधिकार और सम्मान मिले। यह उन परंपरागत सोचों को बदलने का प्रयास करता है जिनमें महिलाओं को केवल घर और बच्चों की जिम्मेदारी तक सीमित रखा जाता है, जबकि पुरुषों को निर्णय लेने और बाहर के कार्यों में अधिक महत्व दिया जाता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3. स्त्रियों के श्रम का सम्मान : महिलावाद इस बात को उजागर करता है कि स्त्रियों द्वारा घर में किया गया कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसे समाज अक्सर महत्वहीन मानकर नजरअंदाज कर देता है। महिलावादियों का स्पष्ट नारा है कि स्त्रियों के घरेलू काम को भी आर्थिक गतिविधियों के समान ही सम्मान और महत्व दिया जाना चाहिए।

4. जागरूकता और सक्रियता : यह विचारधारा केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि एक कार्य-संस्कृति है। इसका उद्देश्य स्त्रियों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा करना है। यह उन्हें यह समझने में मदद करता है कि उनका शोषण व्यक्तिगत नहीं, बल्कि एक 'सामाजिक समस्या' है, जिसके विरुद्ध मिलकर लड़ना आवश्यक है।

5. समान अवसर और अधिकार : महिलावाद का एक प्रमुख लक्ष्य स्त्रियों को शिक्षा, रोजगार, संपत्ति के अधिकार और राजनीतिक भागीदारी में पुरुषों के समान अवसर दिलाना है। यह आंदोलन राज्य और समाज पर दबाव बनाता है ताकि स्त्रियों की सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित हो सके और उन्हें किसी भी संस्था में दबाया न जा सके।

वैकल्पिक मॉड्यूल - II

प्रश्न 41 - भाषा, धर्म, अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था के माध्यम से व्यक्त संस्कृति को _____ के रूप में जाना जाता है।

(A) भौतिक संस्कृति **(B) गैर भौतिक संस्कृति**

(C) लोकप्रिय संस्कृति **(D) उपसंस्कृति**

उत्तर – (B) गैर भौतिक संस्कृति

प्रश्न 42 - वेदों की संख्या चार है, दुनिया का सबसे प्राचीन धर्मग्रंथ _____ है।

(A) यजुर्वेद **(B) सामवेद**

(C) अथर्ववेद **(D) ऋग्वेद**

उत्तर – (D) ऋग्वेद

प्रश्न 43 - जीवन जीने का एक तरीका जो लोगों के एक समूह के लिए सामान्य है। (एक शब्द में परिभाषित कीजिए)

उत्तर – संस्कृति

प्रश्न 44 - शब्द 'वेद' विद् धातु से बना है जिसका अर्थ _____ होता है। (रिक्त स्थान भरिए)

उत्तर – ज्ञान

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 45 - _____ माह के दौरान, उड़िया को शाकाहारी भोजन के अलावा कुछ भी खाने की मनाही होती है।

(A) वैसाख **(B) कार्तिक**

(C) पौष **(D) माघ**

उत्तर – (B) कार्तिक

प्रश्न 46 - _____ पर्यावरण, प्राकृतिक और मानव निर्मित से निपटने की क्षमता है। (रिक्त स्थान भरिए)

उत्तर – संस्कृति

प्रश्न 47 - सभी मनुष्यों ने अपने जीवन को बनाए रखने के लिए अपने प्राकृतिक पर्यावरण में हेर-फेर करने के लिए प्रौद्योगिकी विकसित नहीं की है। (सही / गलत)

उत्तर – गलत

(कारण : मनुष्य ने अस्तित्व रक्षा हेतु सदैव प्रौद्योगिकी का विकास किया है।**)**

प्रश्न 48 - (a) प्राचीन भारत के किन्हीं दो संगीतकारों के नाम बताइए।

उत्तर – प्राचीन भारत के दो प्रमुख संगीतकार –

1. सदारंग (नेमत खान) : ये मुगल दरबार के एक अत्यंत प्रतिभाशाली संगीतकार और वीणा वादक थे। इन्हें 'सदारंग' के नाम से जाना जाता है और इन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

2. त्यागराज : ये दक्षिण भारत के महान कर्नाटक संगीतकार और संत थे। इन्होंने अनेक भक्ति-प्रधान कृतियों की रचना की तथा कर्नाटक संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्हें कर्नाटक संगीत के महानतम संगीतकारों में गिना जाता है।

अथवा

(b) आगम साहित्य में मौजूद दो विशेषताओं या विचारों के नाम लिखिए।

उत्तर – आगम साहित्य में मौजूद दो विशेषताएँ –

1. धर्मग्रंथ के रूप में स्वरूप : आगम साहित्य किसी विशेष पंथ के आधारभूत धर्मग्रंथों की भाँति कार्य करते हैं। ये ग्रंथ उस विशेष पंथ के अनुयायियों के लिए आधिकारिक मार्गदर्शन और धार्मिक प्रमाण के स्रोत माने जाते हैं, जिनका पालन करना संबंधित संप्रदाय के प्रत्येक सदस्य के लिए अनिवार्य होता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. उपासना और अनुशासन के सिद्धांत : इन ग्रंथों में विशेष देवी-देवताओं की उपासना करने की विधियों और पद्धतियों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसके साथ ही, ये ग्रंथ अपने उपासकों के दैनिक जीवन और धार्मिक आचरण के लिए कड़े अनुशासन-सिद्धांत निर्धारित करते हैं, जिन्हें अपनाकर भक्त आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न 49 -(a) संस्कृति की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर – संस्कृति किसी समाज के लोगों के जीवन जीने का ढंग है। इसमें वे सभी चीजें शामिल हैं जो हम समाज में रहकर सीखते हैं। समाजशास्त्र की दृष्टि से संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. संस्कृति सार्वभौमिक है : संस्कृति का गुण सार्वभौमिक होता है, अर्थात संसार के प्रत्येक मानव समाज में संस्कृति अवश्य पाई जाती है। मानव चाहे किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में रहता हो, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसने तकनीक, भाषा, परिवार और सामाजिक नियंत्रण के नियम विकसित किए हैं, जो उसकी संस्कृति को विश्वव्यापी बनाते हैं।

2. संस्कृति साझा की जाती है : संस्कृति जन्मजात या आनुवंशिक नहीं होती, बल्कि यह एक सीखा हुआ व्यवहार है। मानव समाज में रहकर परिवार, मित्रों और समुदाय से जो ज्ञान, कौशल, विश्वास और रीति-रिवाज ग्रहण करता है, वही संस्कृति है। यह संस्कारीकरण की प्रक्रिया द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को निरंतर हस्तांतरित की जाती है।

3. संस्कृति स्थिर, टिकाऊ और गतिशील है : संस्कृति स्थिर और टिकाऊ होने के साथ-साथ अत्यंत गतिशील भी है। जिस प्रकार नदी का जल सतत प्रवाहित रहता है, उसी प्रकार संस्कृति के तत्व समय और स्थान के अनुसार बदलते, सुधरते और रूपांतरित होते रहते हैं, जिससे संस्कृति प्रगतिशील और परिवर्तनशील बनी रहती है।

4. संस्कृति मानवीय है : संस्कृति केवल मानव समाज की ही विशिष्टता है। अन्य जीव-जंतु अपने पर्यावरण में अनुकूलन के लिए अपनी सहज प्रवृत्तियों पर निर्भर रहते हैं, परंतु मानव अपनी विवेकपूर्ण बुद्धि, चिंतन और अर्जित ज्ञान के माध्यम से संस्कृति का निर्माण करता है, जिससे वह प्रकृति को अपने अनुरूप ढालने में सक्षम हो पाता है।

5. संस्कृति सामूहिक धरोहर है : संस्कृति किसी एक व्यक्ति की निजी संपत्ति नहीं होती, बल्कि यह एक संपूर्ण समाज की साझा निधि है। यह उस समूह की सामूहिक उपलब्धि है, जो समान जीवन-शैली का पालन करते हैं। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित होती है और पूरे समुदाय की सामूहिक चेतना और पहचान का प्रतिनिधित्व करती है।

अथवा

(b) "प्राचीन भारत की चित्रकलाएँ अब तक की सबसे महान कलाकृतियाँ हैं।" इस कथन के समर्थन में प्रासंगिक उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर – प्राचीन भारतीय चित्रकला अपनी उत्कृष्टता, बारीकी और सजीवता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इन कलाकृतियों के समर्थन के लिए प्रासंगिक उदाहरण निम्नलिखित हैं -

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

1. अजंता की गुफाएँ : अजंता की गुफाओं की भित्ति चित्रकलाएँ अपनी सजीवता और कलात्मक कौशल के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। गुफाओं की दीवारों पर बने हाथी, नर्तक और संगीतकारों के चित्र प्राचीन भारत की उच्च कला-चेतना और बारीक शिल्पकारी के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माने जाते हैं।

2. ऐलोरा की चित्रकला : ऐलोरा की गुफाओं में अंकित चित्र प्राचीन भारतीय चित्रकला की अद्भुत विविधता को दर्शाते हैं। ये कलाकृतियाँ भारत की प्राचीन वास्तुकला और चित्रकला के उस सुंदर समन्वय का प्रमाण हैं, जो तत्कालीन कलाकारों की अपार प्रतिभा और सौंदर्यबोध को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करती हैं।

3. बाघ की गुफाएँ : ग्वालियर के पास स्थित बाघ की गुफाओं के चित्र, अजंता की कलात्मक शैली और सौंदर्य के अत्यंत निकट हैं। इन चित्रों की बारीकियां और बनाने की तकनीक प्राचीन काल के चित्रकारों की कुशलता को सिद्ध करती हैं, जो आज भी कला प्रेमियों को आश्चर्यचकित कर देती हैं।

4. मधुबनी (बिहार) : मधुबनी चित्रकला की परंपरा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। इन चित्रों में उपयोग की गई अनूठी कलाकृतियाँ और पारंपरिक लोक-शैली प्राचीन भारतीय चित्रकला के उस समृद्ध कौशल को दर्शाती हैं, जो आज भी भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सजीव रूप से जीवित रखे हुए हैं।

5. उड़ीसा की पाट्टा कला : उड़ीसा की पाट्टा कलाकृतियाँ प्राचीन चित्रकारी की सूक्ष्मताओं और बारीकियों का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन चित्रों में धर्म और लोक-जीवन का गहरा मिश्रण मिलता है, जो इन कलाकृतियों को सुकुमार, निर्मल और प्राचीन चित्रकला का एक महान रत्न बनाता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Thank you!

We hope you found this material helpful. We wish you the very best for your examination.

Strive for Excellence – Your Path to Success